

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जनवरी 2025

अंक 460 ● जनवरी 2025

चंकमंक

बाल विज्ञान पत्रिका

किस-किस में

प्रमोद पाठक

चाँद चमकता पानी में
शेर की पूँछ कहानी में
जुगनू भीतर झाड़ी में
खीरा चमके बाड़ी में

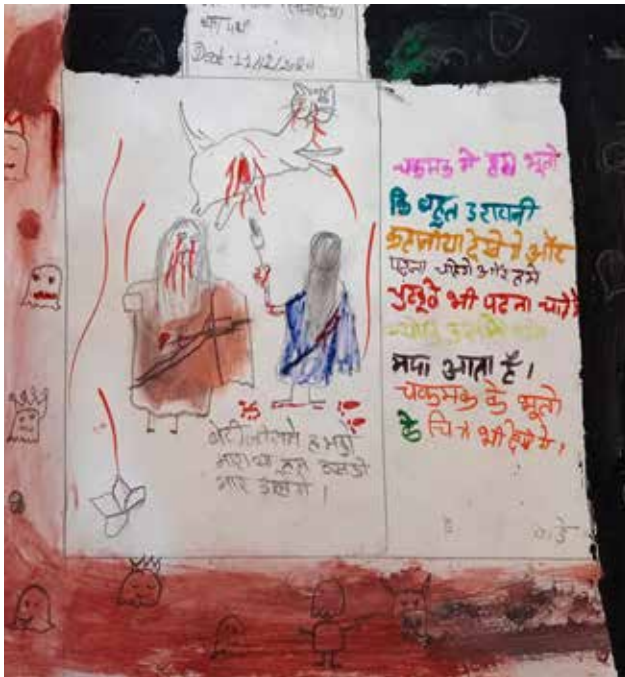
नया साल
मुबारक!

मूल्य ₹50

क्यों क्यों

चकमक में देखना चाहती हूँ कि ऊपर कहानी आए और फिर नीचे चित्र आए। क्योंकि मुझे ऊपर कहानी और नीचे चित्र अच्छा लगता है।

मानवी, तीसरी, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश



चित्र: दिव्यांशी सिसौदिया, चौथी, शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, गजपुर, केसला, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

मेरी प्यारी चकमक

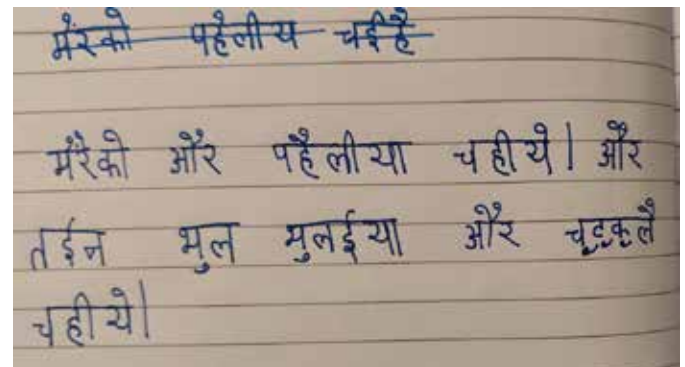
कैसी हो तुम? हर महीने तुम नई-नई सी लगती हो। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि पुराना वाला अंक ज़्यादा अच्छा था या नया वाला। पर समझ ही नहीं आता कि अच्छा कौन है। लेकिन मुझे क्या, मुझे तो केवल पढ़ने के मज़े लेने हैं।

चलो फिर एक बार आपका सवाल मेरे लिए बहुत कठिन है क्योंकि मुझे तो पूरी ही चकमक अच्छी लगती है। लेकिन अब सवाल का जवाब देना है तो मुझे मेरा पन्ना और वर्गपहेली बहुत अच्छी लगती है। क्योंकि मेरा पन्ना बच्चों के अपने लिखे हुए होते हैं। वो अपना अनुभव लिखते हैं। मैं उन अनुभवों को अपने आप से जोड़ पाता हूँ। इसमें मुझे बड़ा मज़ा आता है। चित्रपहेली में चित्रों के माध्यम से पहेली को हल करना होता है। उसमें बहुत माथापच्ची करनी पड़ती है। कभी तो हल हो जाती है और कभी अगले अंक का इन्तज़ार करता हूँ।

चकमक में अगर चुटकुले, मुहावरे और नाटक को कहीं जगह मिल जाए तो और अच्छा होगा। इससे बच्चों को पढ़ने में और मज़ा आएगा।

प्यारी चकमक, तुम्हारी याद आती है। तुम्हारे अगले अंक का इन्तज़ार रहेगा।

मयंक सैन, आठवीं, महात्मा गांधी स्कूल, गांधी नगर, जयपुर, राजस्थान



अधिराज जुगरान, पाँचवीं, असम वैली स्कूल, बालीपुरा, असम

चकमक

2

जनवरी 2025

इस बार

- किस-किस में - प्रमोद पाठक
- क्यों-क्यों
- रीछ का बच्चा - नज़ीर अकबराबादी
- आगरा बाज़ार - शशि सबलोक
- मेरे गाँव में पहला फोन - महेश झरबडे
- फिल्म चर्चा - अप - भाग -2 - निधि गुलाटी
- जुगनू - हबीब अली
- गणित है मज़ेदार - चिट्ठियों और लिफाफों में गणित
- - आलोका कान्हेरे
- मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 7
- - आर एस रेशू राज, र पी माधवन व साथी
- माथापच्ची
- नए पते - न खेलने की परेशानी - राधिका
- चित्रपहेली
- मेरा पत्रा
- अन्तर ढूँढो
- भूलभुलैया
- तुम भी जानो



अंक 460 • जनवरी 2025

चकमक

1

2

4

6

11

13

17

21

26

28

30

32

36

43

43

44



चित्र: प्रोइति रॉय

आवरण चित्र: अप मूवी से साभार

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

डिजाइन

कनक शशि

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

चकमक

3

जनवरी 2025

कल राह में जाते जो मिला रीछ का बच्चा।
ले आए वही हम भी उठा रीछ का बच्चा।
सौ नेमतें खा-खा के पला रीछ का बच्चा।
जिस वक्त बड़ा रीछ हुआ रीछ का बच्चा।
जब हम भी चले, साथ चला रीछ का बच्चा।

था रीछ के बच्चे पे वह गहना जो सरासर।
हाथों में कड़े सोने के बजते थे झमककर।
कानों में दुर¹, और घुँघरू पड़े पाँव के अन्दर।
वह डोर भी रेशम की बनाई थी जो पुरज़र।
जिस डोर से यारो था बँधा रीछ का बच्चा।



रीछ का बच्चा

नज़ीर अकबराबादी

चित्र: ईरा रॉय

एक तरफ को थीं सैकड़ों लड़कों की पुकारें।
एक तरफ को थीं, पीरों²-जवानों की कतारें।
कुछ हाथियों की कीक और ऊंटों की डकारें।
गुल शोर, मज़े भीड़ ठठ, अम्बोह³ बहारें।
जब हमने किया लाके खड़ा रीछ का बच्चा।

मुद्दत में अब इस बच्चे को, हमने है सधाया।
लड़ने के सिवा नाच भी इसको है सिखाया।
यह कहके जो ढपली के तई गत पै बजाया।
इस ढब से उसे चौक के जमघट में नचाया।
जो सबकी निगाहों में खुबा "रीछ का बच्चा"।

इस रीछ के बच्चे में था इस नाच का ईजाद।
करता था कोई कुदरते खालिक⁴ के तई याद।
हर कोई यह कहता था खुदा तुमको रखे शाद⁵।
और कोई यह कहता था 'अरे वाह रे उस्ताद'।
"तू भी जिये और तेरा सदा रीछ का बच्चा"।

जब हमने उठा हाथ, कड़ों को जो हिलाया।
खम ठोंक पहलवां की तरह सामने आया।
लिपटा तो यह कुश्ती का हुनर आन दिखाया।
वाँ छोटे-बड़े जितने थे उन सबको रिझाया।
इस ढब से अखाड़े में लड़ा रीछ का बच्चा।

जिस दिन से "नज़ीर" अपने तो दिलशाद यही हैं।
जाते हैं जिधर को उधर इरशाद⁶ यही हैं।
सब कहते हैं वह साहिब-ए-ईजाद⁷ यही हैं।
क्या देखते हो तुम खड़े उस्ताद यही हैं।
कल चौक में था जिनका लड़ा रीछ का बच्चा।

- 1 मोती
- 2 बूढ़ों
- 3 भीड़
- 4 कुदरत को बनानेवाला
- 5 खुश
- 6 फरमान
- 7 आविष्कारक



मुफलिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है
शायर कहो, नज़ीर कहो, आगरे का है

आगरा बाज़ार

शशि सबलोक



बात शायद 2008 की है जब भोपाल के भारत भवन में मैंने 'आगरा बाज़ार' देखा था। 'आगरा बाज़ार' देखने का मन इसलिए था कि यह हबीब तनवीर का नाटक है। इससे पहले मैं उनका यादगार नाटक 'चरणदास चोर' देख चुकी थी। और इसलिए भी कि मेरी पढ़ाई के कुछ खास साल आगरे में गुज़रे हैं। वहाँ के बेतरतीब बाजारों की भीड़भाड़ से लगाव-जुड़ाव को फिर से जीने की चाह थी।

खैर, हबीब साब का 'आगरा बाज़ार' पूरे तीन घण्टे मंच पर भरा रहा। वहाँ अचार, बरतनों, चूड़ी-बिन्दी, किताबों, पतंग, पान की पक्की दुकानों के सामने एक खोमचे वाला लड़कू लिए बैठा रहा। बगल में एक आदमी ककड़ियाँ और एक तरबूज़ लिए रहा। एक तरफ किताब की दुकान रही और उसके ठीक सामने पतंग वाले

की दुकान। जिनके बीच लगातार नोकझोंक चलती रही। चौक बाज़ार की तरह यहाँ पूरे वक्त आवाजाही बनी रही। फकीर-दरवेश गले में हारमोनियम टाँगे फिर-फिर आते रहे, गाते रहे और जाते रहे। मदारी आया, रीछ का बच्चा लिए नाचता-गाता बूढ़ा आया। होली, गुरपरब, कृष्णोत्सव, बलदेवजी का मेला जाते नाचते-गाते आदमी-औरतें-बच्चे-बूढ़े, हिजड़े आए। बीच-बीच में दारोगा, शायर, खरीददार आते रहे। तीन घण्टे हम दर्शक बाज़ार में बने रहे। बेचनेवालों की चुहलों-झड़पों में शामिल हुए, मेलेवालों के साथ नाचे-गाए, होली में रंगे, फकीरों के गीतों में बहे, दरोगे को कोसा, शायरों के अक्खड़पन से चिढ़े। बाज़ार में बाज़ार हो गए। जैसे कोई खेल हो। रिहर्सल हो। नाटक होना बाकी हो। वहाँ नाचना-गाना अलग और जीवन अलग न था। जीवन का हिस्सा था।

कुकुमक

6

जनवरी 2025

इस बाज़ार में खरीददार कम बेचनेवाले ज़्यादा हैं। वो सामान लिए बैठे हैं। हर खरीददार को आस से देखते हैं। कोई खरीदता नहीं। माल बिक नहीं रहा। तंगहाली है। मन्दी है। मुफलिसी है। मदारीवाला नाच दिखाकर जैसे ही पैसा माँगने लगता है लोग मुड़कर चल देते हैं। वो ककड़ीवाले पर बीच में आ जाने का दोष धर भिड़ जाता है। सबकी दुख-तकलीफें हैं। पर वो उसी में धँसे नहीं रहते। मंच पर मेले जाते लोगों के आते ही सब उस रंग में रंगे जाते हैं। नाचते-गाते जीवन का उत्सव मनाते हैं। और उनके जाते ही फिर खरीददार की बाट जोहने लगते हैं। ककड़ीवाले की ककड़ियाँ नहीं बिक रहीं। उसे लगता है कि वो गाके बेचेगा तो बिकेंगी। वो बाज़ार से गुज़रते कितने ही शायरों से अपनी ककड़ी पर नज़्म लिखने की मन्नत करता है। वो ककड़ी जैसी अदना चीज़ पर लिखने को अपनी तौहीन मानकर चलते बनते हैं। तब उसे नज़ीर की खबर लगती है। ककड़ीवाला कुछ देर मंच से गायब रहता है। और लौटता है नाचता-गाता।

क्या प्यारी-प्यारी मीठी और पतली-पतलियाँ हैं

गन्ने की पोरियाँ हैं रेशम की तकलियाँ हैं

क्या खूब नर्म-ओ-नाज़ुक इस आगरे की ककड़ी और जिसमें खास काफिर असकन्दरे की ककड़ी

और उसकी ककड़ियाँ बिकने लगती हैं। देखादेखी तरबूज़ और लड्डूवाला भी नज़ीर से लिखवा लाते हैं। और उनका माल बिकने लगता है। वो जम के नाचते हैं। नाचते हुए गाते हैं। एक साथ। खुल के। मस्ती में। ये कोरियोग्राफ़्ड मूमेंट्स नहीं हो सकते। यह उस क्षण को जीने से आए मूमेंट्स हैं। दर्शक उनकी खुशी में शामिल हो जम के तालियाँ बजाते हैं।

नाटक में आम लोगों के जीवन की कई झलकियाँ हैं। एक तरफ़ किताब की दुकान पर बैठे उर्दू के अदीब नज़ीर की शायरी को शायरी मानने से इन्कार किए रहते हैं। उसके ककड़ी, अचार, तैराकी, तरबूज़, चूरन, होली, मेलों, रीछ के बच्चे, मच्छर,

खटमल, साँप के बच्चे, छोटे मकानों, बड़े मकानों, नालों पर लिखने को अदबी नहीं मानते। किताब विक्रेता और पतंग विक्रेता समाज के दो अहलदा वर्गों को दर्शाते हैं। पढ़े-लिखों को वो पसन्द तो थे। पर उन्हें एक कवि का दर्ज़ा देने में गुरेज़ था। जबकि आम लोग उन्हें एक इन्सान और कवि दोनों के रूप में प्यार करते थे। एक ऐसा कवि जो जीवन की साधारण चीज़ों को अपनी शायरी में असाधारण बना देता। किताब विक्रेता उनके आम बोलचाल की भाषा में लिखने का मज़ाक बनाते। वहीं आम आदमी इसी को सिर आँखों पर लिए रहते। इन दोनों की नोकझोंक से नज़ीर का व्यक्तित्व सामने आता है। नाटक के अन्त में किताब की दुकानवाला पतंगवाले के पास आ जाता है। नज़ीर की शायरी स्थापित हो जाती है। नज़ीर को जीते जी भले ही किसी अदीब ने नहीं पूछा। वो लगभग सौ साल रहे। पर आज दो सौ साल तक लोगों ने उन्हें ज़िन्दा रखा है। गाँव-देहात में लोग आज भी उन्हें गाते हैं। एक से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचा रहे हैं।

पूरे नाटक में कोई एक कहानी नहीं है जो इन कहानियों को जोड़ती है। दरअसल कोई कहानी है ही नहीं। न कोई मुख्य पात्र है। न कोई शुरुआत, न बीच, न अन्त है। और तो और नाटक जिस एक किरदार को बीच में रखे है, वो भी मंच पर नहीं आता। तमाम दूसरे किरदार अपने संवादों से इस एक किरदार को गढ़े जाते हैं। एक कहानी न होने के बावजूद जो एक चीज़ सब को जोड़े रही वो था इसका संगीत। संगीत की एक किरदार की तरह पूरे नाटक में अहम उपस्थिति रही। वो संगीत चाहे फकीर का हो या लोगों का जो खुशी में, गम में बस गाए-नाचे जा रहे हैं। हर घटना के बाद मंच पर गाते फकीर जैसे सूत्रधार हों। जो हो रहा है उसे गाकर कड़ियों में जोड़ने का काम यही कर रहे थे। नज़ीर के लिखे में लय इतनी ज़बरदस्त है, मीटर इतना सटीक है कि एक भी शब्द इधर से



उधर नहीं हो सकता। सुरों के उतार-चढ़ाव में यह रवानगी आकर ही रहती है। नज़्मों में जो कहा गया है धुनें उस भाव को और ऊँचा देती हैं।

यह 18वीं सदी का आगरा बाज़ार था। उस बाज़ार से अलग जो मैंने 1984 में देखा। आगरा बाज़ार दरअसल नज़ीर अकबराबादी की शायरी का बाज़ार है। नज़ीर की नज़र का। हबीब तनवीर कहते हैं कि इस नाटक में सिर्फ नज़ीर की नज़्में होतीं तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। इसमें वही दिखा जो नज़ीर ने लिखा। उसने रीछ के बच्चे पर न लिखकर बिल्ली के बच्चे पर लिखा होता तो नाटक में वही जगह पाता। नज़ीर ने तय किया इस नाटक में क्या होगा। नज़ीर की शायरी में पिरोई गई कहानियाँ हैं। कोई गाते-नाचते हुए भी बेच सकता था यह इसलिए हुआ कि नज़ीर ने उसे इस नज़र से देखा। जो भाव नज़्म में रहा वही नाटक में आया। दुखों के बावजूद हर बात का उत्सव मनाना दर्शकों को पिघला जाता है। उम्मीद

से भर देता है। एकमात्र जगह दुख चरम पर था जब एक बूढ़ा, अन्धा भिखारी दर्द में डूबी आवाज़ में गाते हुए भीख माँगता आता है।

जब आदमी के हाल पै आती हैं मुफलिसी
किस-किस तरह से उसको सताती हैं मुफलिसी
प्यासा तमाम रोज़ बिठाती हैं मुफलिसी
भूका तमाम रात सुलाती हैं मुफलिसी
ये दुख वो जाने जिस पै कि आती हैं मुफलिसी

पूरा मंच बदल जाता है। एकटक एक जगह पर जमे सब उसे देखते हैं। कि पतंगवाला आगे बढ़कर उसके कशकोल में पैसे रख देता है। ककड़ी वाले के पास ककड़ी है, वह वही देता है। तरबूज़ वाला तरबूज़। लड्डू वाला लड्डू। दर्शक इस से दो-चार हो ही रहे होते हैं कि मंच के दूसरे कोने से होली मनाते नाचते-गाते लोग चले आते हैं। और दर्शकों समेत लोग उसमें शामिल हो जाते हैं। तभी रीछ के बच्चे के साथ एक बूढ़ा गाता-नाचता आता है।

कल राह में जाते जो मिला रीछ का बच्चा
ले आये वहीं हम भी उठा रीछ का बच्चा
सौ नेमतें खा-खाके पला रीछ का बच्चा
जिस वक्त बड़ा रीछ हुआ रीछ का बच्चा
जब हम भी चले साथ चला रीछ का बच्चा।

दर्शक उस भिखारी को पहचान जाते हैं। और मुस्करा देते हैं। राहत की साँस लेते हैं। कुछ भी नहीं ठहरता। न दुखा न सुखा सब आनी-जानी है।

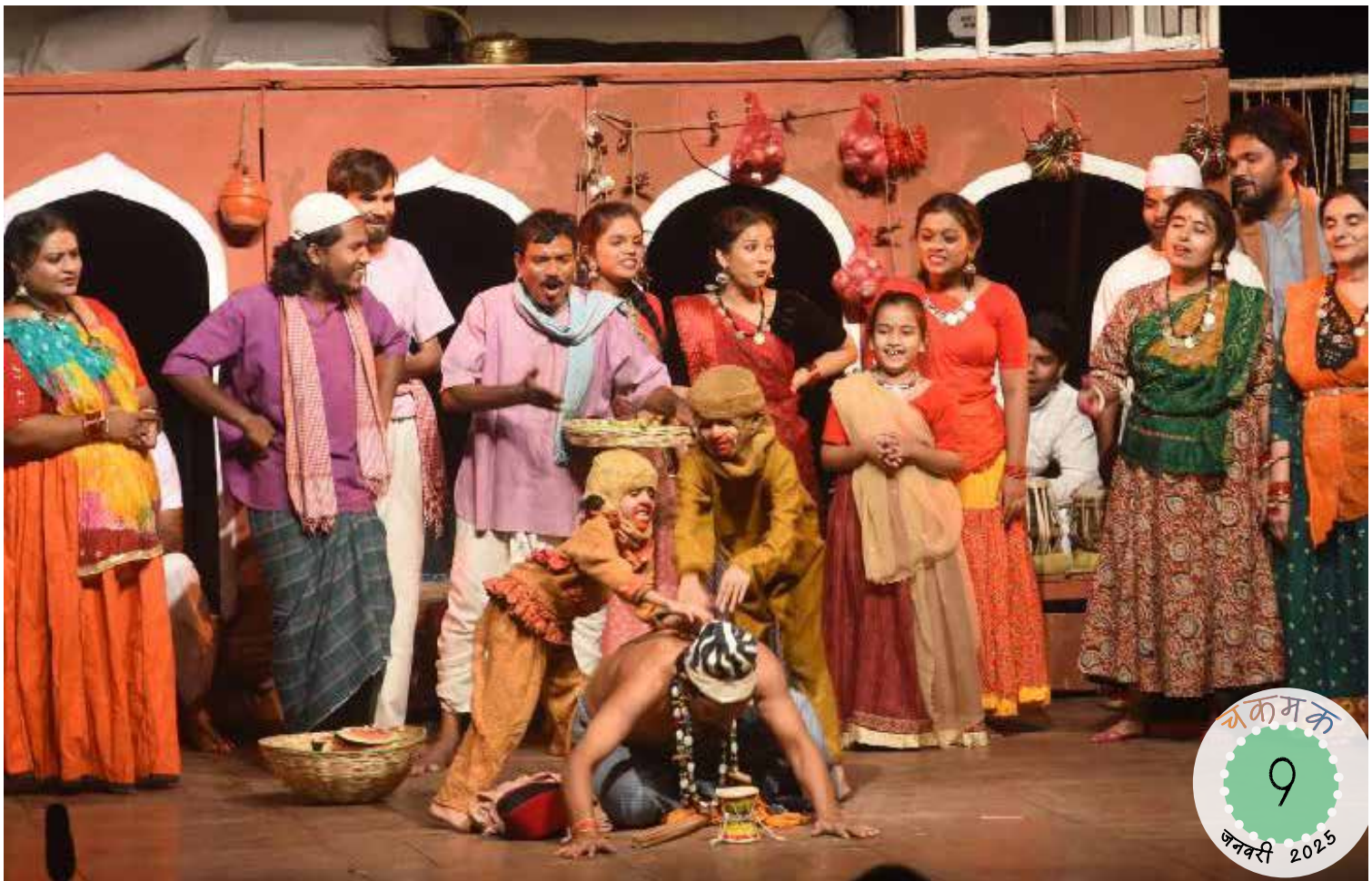
और अन्त में नज़ीर एक आम आदमी को एक बादशाह के बिलकुल करीब ला खड़ा करते हैं। सब-सब बराबर।

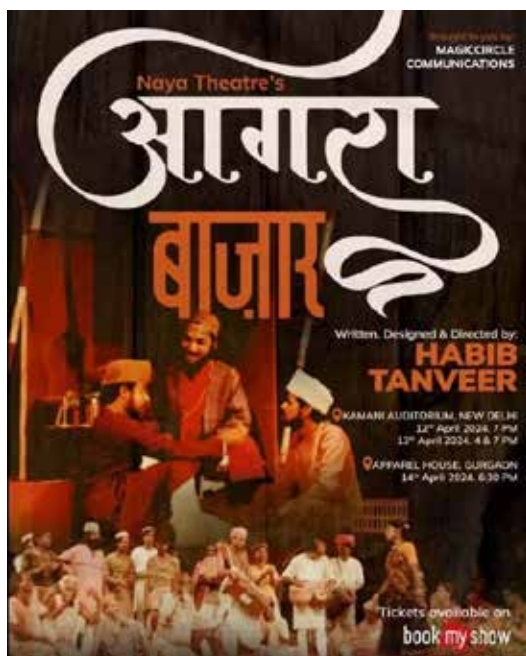
दुनिया में बादशाह हैं सो हैं वह भी आदमी
और मुफलिस-औ-गदा हैं सो हैं वह भी आदमी
यां आदमी पै जान को वारे हैं आदमी
और आदमी पै तेग को मारे हैं आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे हैं आदमी

चिल्ला के आदमी को पुकारे हैं आदमी
और सुनके दौड़ता हैं सो हैं वो भी आदमी
अच्छा भी आदमी ही कहाता हैं ऐ नज़ीर
और सबमें जो बुरा हैं सो हैं वो भी आदमी

आगरा बाज़ार के तमाम किरदार मंच पर इसे एक साथ गाते हैं। दर्शकों की क्या बिसात कि वो बैठ पाते। सब सुर में सुर मिलाकर गाने लगते हैं। मंच-दर्शक दीर्घा का भेद मिट जाता है। उधर झाँझ और हारमोनियम है, इधर तालियाँ। पूरा हॉल एक समूह बन जाता है। एक सेट। जिसका कोई सबसेट नहीं। हॉल से निकलकर भी संगीत उन्हीं आवाज़ों और थिरकनों के साथ आपके साथ रहा आता है।

और मैं याद करती हूँ ताजमहल के पीछे बसे ताजगंज को। ताजमहल-लालकिला घूमने के लिए हम यहीं से साइकिल किराए पर लेते थे। तब क्या पता था नज़ीर मियां यहीं आराम फरमा रहे हैं। नहीं तो कह आती किराए की साइकिल पर एक नज़्म लिखिए तो...





आगरा बाज़ार का बनना

आगरा बाज़ार हबीब साब का खेला पहला नाटक है।

1954 में हबीब तनवीर को दिल्ली के जामिया मिलिया कॉलेज से एक नाटक लिखने का प्रस्ताव मिला। यह नाटक नज़ीर दिवस पर खेला जाना था। नज़ीर अकबराबादी 18वीं सदी के शायर थे। जिन्होंने अपना लम्बा जीवन आगरे में बिताया। आगरा उन दिनों अकबराबाद कहलाता था। यह वो समय था जब मुगलों का पतन हो रहा था और अँग्रेज़ कदम बढ़ा रहे थे। देश में भयानक बेरोज़गारी थी। मन्दी थी। मुफलिसी थी। ऐसे में नज़ीर ने आम लोगों के बारे में लिखा। उनके जीवन से जुड़ी तकरीबन हर चीज़ पर लिखा। और उस समय के हालातों और इन्सान की फितरत पर भी।

1954 में जब हबीब साब आगरा बाज़ार लिख रहे थे तो नाटक में दिखाए जा रहे समय और नाटक लिखे जाने वाले समय में समाज की स्थिति बहुत बदली न थी। तब मुगलों के पतन और अँग्रेज़ों के आने से भुखमरी, तंगहाली थी। और अब नया आज़ाद हुआ भारत विभाजन की तबाही से जूझ रहा था।

यह नाटक जामिया के विद्यार्थियों और ओखला गाँव के लोगों के साथ किया गया। वे नज़ीर के आम लोगों की तरह ही थे — पानवाले, सब्ज़ी बेचनेवाले। वो सीखे एक्टर थे। आम बोलचाल की भाषा में बात करते थे। नज़ीर ने भी उसी भाषा में लिखा जिसे लोग आपस में बरतते थे। इस नाटक की भाषा के लिए मर्जा फरहतपल्ला बेदग की किताब *दिल्ली की खास आवाज़ें* का सहारा लिया गया। इसमें उस समय गलियों, नुक्कड़ों में बोली जाने वाली ज़बान का ज़िक्र है। नाटक में लड़खूवाला ककड़ीवाले को बार-बार “अरे! कालिया” कहता है। आपसी बोलचाल में ऐसा अक्सर कहा जाता है। यह न बोलनेवाले को खलता है, न सुननेवाले को। हबीब साब ने पॉलिटिकल करेक्टनेस का ख्याल न रखते हुए इसे बदला नहीं।

अपने शुरुआती शो के बाद से आगरा बाज़ार में काफी कुछ जोड़ा गया। एक घण्टे की प्रस्तुति तीन घण्टे की हो गई। उस समय की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों के साथ-साथ सत्ता की भ्रष्टता, साहित्यकारों, उर्दू साहित्य, मुद्रण की तब्दीलियाँ आदि जुड़ता गया। इस पर भी नाटक लचीला बना रहा। कभी पात्र बदल दिए। काट-छाँट भी हुई। कभी दर्शकों को देखते हुए हबीब साब उसकी अवधि कम कर देते थे।

नाटक में भूख, मुफलिसी ज़रूर रही।

इन रोटियों के नूर से सब दिल हैं पूर-पूर
आटा नहीं है छलनी से छन-छन गिरे हैं नूर
पेड़ा हर एक उसका है बर्फी व मोतीचूर
हरगिज़ किसी तरह न बुझे पेट का तनूर
इस आग को मगर ये बुझाती हैं रोटियाँ

पर उसी का रोना नहीं रोया गया। मुश्किलें हैं पर रंग भी हैं।

क्या गेहूँ चावल मूँठ मटर क्या आग धुवाँ और अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा
धन दौलत नाती-पौता क्या इक कुन्बा काम न आवेगा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा



यह किस्सा सुनाने के लिए मैं तुम्हें ले चलता हूँ 2024 से थोड़ा पीछे, थोड़ा और, बस... बस। सन 2006 आ गया है ना, यहीं रुकना है। अब सुनो...

मध्यप्रदेश के बैतूल ज़िले की शाहपुर तहसील में एक छोटा-सा गाँव है। नाम है हांडीपानी। पहाड़ों और हरियाली से घिरे इस गाँव में विभिन्न समुदायों के लोग रहते हैं। ज्यादातर लोग खेती और मज़दूरी का काम करते हैं। त्योहारों में मस्त खाते-पीते और नाच-गाना करते हैं। फिर वापस अपने काम में लग जाते हैं।

उस समय मनोज गाँव का दूसरा लड़का था जिसने बारहवीं पास की थी। और पढ़ाई के बाद वापस अपने गाँव लौट आया था। वापस आने के कुछ महीनों बाद उसने एक मोबाइल खरीदा — “नोकिया 1250”।

मेरे गाँव में पढ़ला फोन

महेश झरबड़े

चित्र: प्रशान्त सोनी



यह पहला मौका था जब गाँव में किसी ने मोबाइल फोन खरीदा था। पूरे गाँव में अचानक से खुशी की लहर दौड़ गई थी। कल तक जिनके पास अपने रिश्तेदारों, मालिकों से सम्पर्क करने का कोई ज़रिया नहीं था वे आज खुश थे कि गाँव में जो फोन है उसके माध्यम से अब वे उनसे बात कर पाएँगे। यही वजह थी कि मनोज का फोन नम्बर गाँव के लगभग हरेक परिवार के पास था। वे अपने जाननेवालों और रिश्तेदारों को ये नम्बर देकर गर्व से कहते, “चोईका कामू बोचो मेके इनी नम्बरेन फोन लगाऊयाकी” (कुछ काम पड़े तो इस नम्बर पर फोन लगा लेना)।

मज़ेदार बात यह थी कि गाँव में नेटवर्क आसानी से नहीं मिलता था। लेकिन मनोज ने इसकी एक शानदार जुगाड़ की थी। मनोज के घर के पीछे एक टंकी बनी हुई थी। टंकी से लगा हुआ एक बेर का पेड़ था। इस बेर की डाली में मज़बूत धागे के साथ फोन लटका दिया गया था। जब भी किसी को बात करनी होती तो टंकी पर चढ़कर धागे से लटके हुए फोन को बिना हिलाए-डुलाए बात करनी पड़ती। क्योंकि इधर-उधर करने से नेटवर्क जाने का डर होता था।

यदि किसी की ऊँचाई कम हो तो आ रही आवाज़ को सुनने और अपनी आवाज़ सुनाने के लिए उसे बहुत ज़ोर-से बोलना होता था। यह

किसी पहाड़ तोड़ने से कम नहीं था। दूसरी बात यह कि फोन स्पीकर पर होता था ताकि आवाज़ साफ सुनाई दे पाए।

मनोज या उसके पापा घर के पीछे टंकी के पास खटिया लगाकर बैठे रहते थे। जैसे ही फोन की घण्टी बजती वे फोन रिसीव और कहते, “15 मिनट बाद लगाना, तब तक उसको बुलाकर लाता हूँ।” फिर वे अपनी साइकिल उठाते और उसके घर जाकर बताते कि तुम्हारा फोन आया है, बात कर लो। जैसे ही ये बात पता चलती घर के दो लोग और साथ चलने को तैयार हो जाते। कहते, “तुम बात करना। हम उसकी आवाज़ ही सुन लेंगे।”

इस तरह जब कोई फोन पर बात कर रहा होता था तो चार लोग आश्चर्य से उसे देखकर मुस्करा रहे होते थे। पूरे गाँव की फोन पर निर्भरता थी। बहुत दूर-दूर होकर भी सब बहुत पास थे। परेशानी थी, पर मज़ा भी था। आज हर घर में दो से तीन फोन हैं, पर वो खुशी पता नहीं कहाँ है।



निधि गुलाटी

अप

रिलीज सन : 2009

निर्देशक: पीट डॉक्टर

निर्माता: पिक्सर एनिमेशन स्टूडियोज और

वॉल्ट डिज्नी पिक्चर्स

तुम्हें शायद याद होगा कि सितम्बर के लेख में हमने *अप* फिल्म के कई पहलुओं पर बात की थी। हमने फिल्म में आकृतियों की भाषा की बात भी की थी। और देखा था कि *अप* में एली का चेहरा गोल है। उन्हें देखकर लगता है कि इन्हें फटाफट दोस्त बना लो। कार्ल का चेहरा चौकोर है। उनकी ठोड़ी भी चौकोर है। उन्हें देखते ही लगता है कि वह ज़िद्दी हैं, अपनी बात पर अड़े रहते हैं। उनका मिज़ाज ऐसा है कि जो ठान लिया, तो बस ठान लिया।

अब हम इसी फिल्म में रंगों के इस्तेमाल पर बात करते हैं। याद है पिछले लेख में दो तस्वीरें थी जिनमें कार्ल और एली पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। एक में सुबह का दृश्य था और दूसरी

में शाम का। सुबह और शाम के रंग अलग थे। सुबह हरा, पीला चमकता रंग, तो शाम को भूरा, उदास-सा रंग। ये रंग कार्ल और एली की ज़िन्दगी की सुबह और शाम भी दिखाते हैं। गौर-से दोबारा देखना इन्हें। किस चित्र में एली और कार्ल दोनों खुश हैं और किसमें उदास? एली रोज़ ही रंग-बिरंगी टाई बाँधती है कार्ल को। कार्ल के कपड़े तो भूरे हैं, पर उनकी टाई मस्त हैं। तो दोनों में से कौन-सा ज़्यादा खुशमिज़ाज है और कौन बोझिल?



रंगों की भाषा

तुम्हें शायद ये जानकर हैरानी हो कि कई फिल्मों में रंग की अलग से स्क्रिप्ट बनती है। *अप* में रंग का खास तौर पर एक प्लान बनाया गया। *अप* के शुरू के 9 मिनटों के रंगों की स्क्रिप्ट मैंने

ढूँढी है, तुम्हारे लिए। हर सीन के अपने रंग भी हैं। बदलते सीन के बदलते रंग बदलती कहानी को भी दर्शाते हैं। अच्छा, एक काम दूँ तुम्हें? किसी कहानी की किताब को उठाकर, किसी एक चित्र का रंग प्लान बताना। चाहो तो अपने स्कूल की किताब का भी रंग प्लान बताना।

रंगों की एक खासियत होती है संतृप्ति (saturation)। किसी रंग की संतृप्ति से मतलब है कि वह कितना गाढ़ा या चटक दिखाई देता है। ज्यादा संतृप्त रंग चमकीला और जीवन्त होता है, जबकि कम संतृप्त रंग ऐसा लगता है जैसे किसी ने उसे धो दिया हो। यह भूरे रंग के करीब होता है। *अप* के जिन चित्रों में खुशी है, उनमें रंग चमकीले और जीवन्त हैं। उनमें रंग की संतृप्ति गाढ़ी है। जहाँ दुख दिखाना है, वहाँ रंग हल्के हैं और संजीदगी लिए हैं। जैसे कि एली के बीमार होने वाले दृश्य में। एली की पेंटिंग्स के रंग ढूँढ़ना ज़रा! बताना कैसे हैं।



अप के निदेशक ने किसी इंटरव्यू में साझा किया था कि उन्होंने बहुत सोचकर तय किया था कि एली को वे मैजेंटा रंग से दिखाएँगे। जब तक एली फ्रेम में हैं, मैजेंटा रंग है। लेकिन फिल्म में उनके मरने के बाद यह चटक रंग धीरे-धीरे गुलाबी हो जाता है, फिर हल्का गुलाबी। रंग इतने हल्के होते चले जाते हैं कि एक-दूसरे में घुलने लगते हैं। इन दो तस्वीरों को ध्यान से देखो। फिल्म में ये दोनों दृश्य लगभग 2 सैकेंड के अन्दर ही आते हैं। पहली तस्वीर में एली को दफनाकर कार्ल घर में घुस रहे हैं और दूसरी तस्वीर में वे लगभग घर के भीतर घुस ही चुके हैं। इन दोनों दृश्यों के बीच रंग कैसे बदलते हैं? गुलाबी रंग धीरे-धीरे गायब हो जाता है, रोशनी भी कम हो जाती है।

रंगों पर इतना ध्यान क्यों?

बिना बोले भी रंग बहुत कुछ कह जाते हैं। हमें बहुत कुछ महसूस कराते हैं। जब मैं छोटी थी तो मेरे घर में हरे रंग की पुताई की जाती थी। माँ



कहती थीं इससे आँखों को आराम महसूस होता है। जब भी पेड़ और हरियाली देखते हो तो सुकून-सा लगता है। है ना? अभी मेरे सामने की दीवार क्रीम कलर की है, कुछ-कुछ सफेद मक्खन जैसे रंग की। इस कमरे में मुझे शान्ति लगती है, आराम महसूस होता है। तुम्हारे सामने इस समय कौन-सा रंग है? उसे देखकर तुम्हें कैसा लग रहा है?

तो, *अप* में एली का अपना रंग है, मैजेंटा। एक तस्वीर में उनके बाल इस रंग के हैं!! यानी फिल्म में हर पात्र के अपने अलग रंग हो सकते हैं, जिनसे उनके व्यक्तित्व के बारे में कुछ संकेत मिलते हैं। रंग का जुड़ाव हमारी भावनाओं से है और ये हमारी मनोदशा को पूरी तरह से नियंत्रित कर सकते हैं।

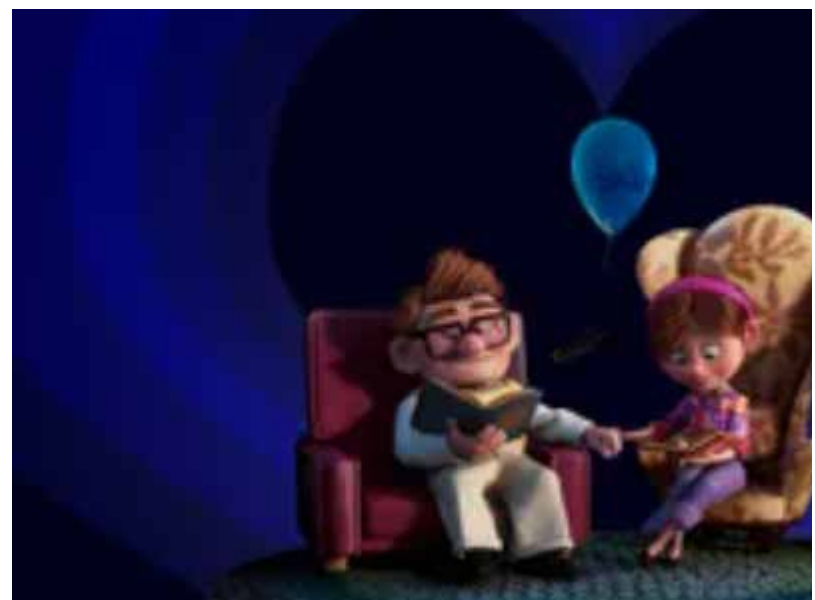
एली कार्ल की ज़िन्दगी में सिर्फ रंग ही नहीं, रोशनी भी भरती हैं। जहाँ-जहाँ एली हैं, वहाँ सफेद दूधिया रोशनी है। एली के आसपास सूरज की चमक है, वहीं कार्ल छाया में हैं, धुँधले हैं। साफ है कि उनकी धूमिल, नीरस-सी ज़िन्दगी की रोशनी एली हैं।

रोशनी और अँधेरे के बीच का यह विरोधाभास हमारा ध्यान अपनी ओर खींचता है। जिन जगहों पर यह कॉन्ट्रास्ट तेज़ है, वहाँ हमारी आँखें ज़्यादा आकर्षित होती हैं। ये हमें यह भी बताता है कि कहानी का यह हिस्सा अहम है, ज़रा यहाँ नज़र डालो, ध्यान से देखो या सुनो। और जहाँ भी, जिस चीज़ पर भी हम ध्यान लगा पाते हैं, वहीं हमारी भावनाएँ सामने आ जाती हैं। हम कहानी से जुड़ने लगते हैं। फिल्म में शुरू में ही हम एली से जुड़ने लगते हैं। चाहे वो बाद में दिखाई दें या नहीं, हमारे ज़हन में रहती हैं। कार्ल के साथ तो रहती ही हैं।



कल्पना और वास्तविकता का मेलजोल

ये तो हुई एली की बात। पर फिल्म में एली से ज़्यादा रंगीन और रोशनी से भरा कौन है? केविन। फिल्म के विलेन चार्ल्स मन्तज तो जुनूनी हैं केविन के लिए। कहानी के अन्त तक पता ही नहीं चलता कि केविन वास्तव में है भी या नहीं। वह मन्तज की कल्पना भी तो हो सकता है? अब जो हो सकता है और नहीं भी हो सकता – ऐसा प्राणी कैसे दिखाएँ फिल्म में? वह कैसा दिखेगा, कैसी आवाज़ करेगा, कैसे चलेगा, कैसे उड़ेगा, किस तरह के अण्डे देगा...





और पता नहीं क्या-क्या बताना है उसके बारे में। साथ ही उसके काल्पनिक होने का भ्रम भी कायम रखना है। यह तालमेल बिठाने के लिए, केविन को खूब रंग-बिरंगा दिखाया गया। जब भी उसके पंखों पर सूरज की रोशनी पड़ती है, वे सोने की तरह झिलमिलाने लगते हैं।

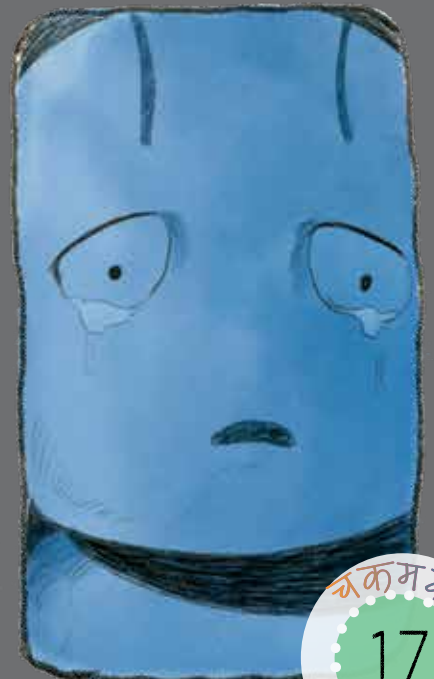
केविन को चित्रित करने के लिए फिल्म के चित्रकारों और ऐनिमेटर्ज़ ने हिमालय के मूल निवासी मोनल तीतर से प्रेरणा ली। मोनल तीतर हरे, बैंगनी, लाल और नीले रंग के इन्द्रधनुषी पंखों के साथ-साथ अपनी ताँबे के रंग की पूँछ, फिरोज़ी-नीली त्वचा और मोर जैसे शिखर के लिए जाना जाता है। मोनल को देखकर बना केविन — 13 फुट लम्बा, लम्बी इन्द्रधनुषी नीली गरदन और चमकते बैंगनी पंख। एनिमेशन की प्रेरणा के लिए टीम ने एक शतुरमुर्ग का अध्ययन किया। उसकी गतिविधियों और तौर-तरीकों को देखा। मुझे तो उसके दिमाग की भिन-भिन किसी टेलीफोन की डायल टोन जैसी लगती है। शायद ऐनिमेटर्ज़ को केविन को चित्रित करने में, दिखाने में सबसे ज़्यादा मज़ा आया होगा। क्या तुमने बनाई हैं कभी ऐसे जानवरों की तस्वीरें? सिर शेर का, धड़ बकरी का और पूँछ वाला हिस्सा ड्रैगन का? ऐसे काल्पनिक जानवर को यूनानी मिथकों में काइमेरा (chimera) कहा जाता है। गूगल करना इसके बारे में।

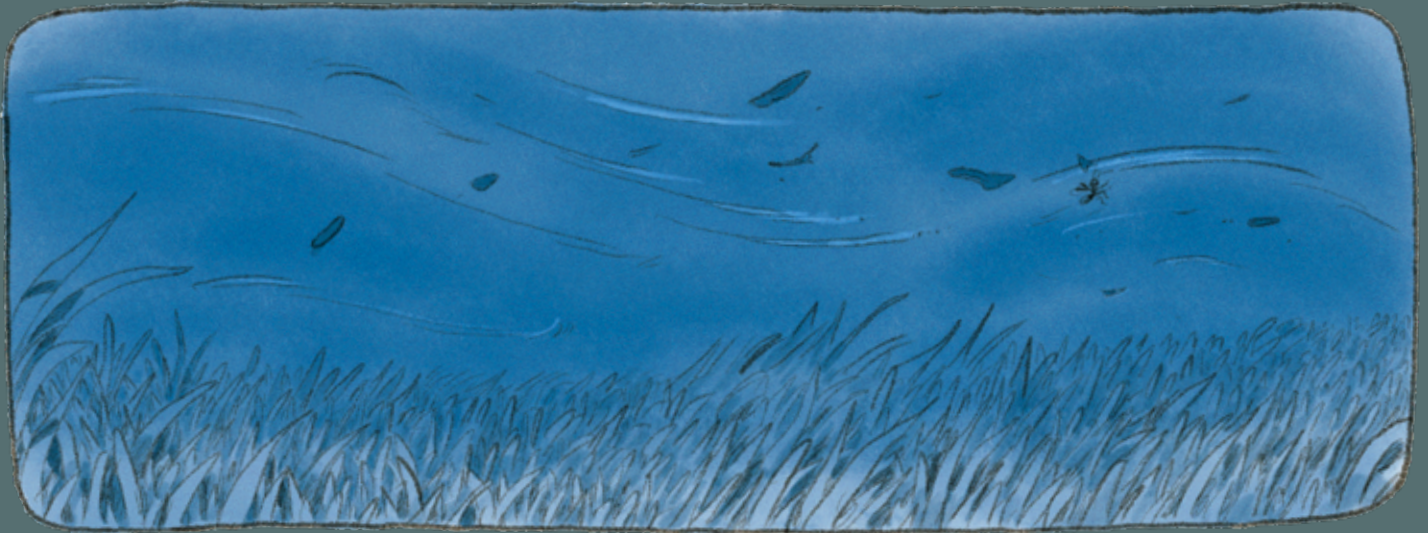
तो तस्वीर बनाने के लिए बहुत-सी चीज़ों पर ध्यान देना पड़ता है — रंग, रोशनी, आकृति, ज्यामिति। और किसी भी वास्तविक चीज़ को चित्रित करने से पहले ये ज़रूरी है कि उसे गौर से देखा जाए, उसके पहलुओं की समझ बनाई जाए और फिर उसे वास्तविकता से जोड़ा जाए। यदि तुम कोई ऐसी काल्पनिक चीज़ बनाना चाहो जिस पर कोई भी यकीन कर सके कि वो सच में है, तो इसके लिए किसी ऐसी चीज़ से प्रेरित होना ज़रूरी है जो सच में मौजूद हो।



हबीब अली

जुगनू









चिट्ठियों और
लिफाफों में गणित
आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी चित्र: मधुश्री

गणित
मलेदार

मान ले तेरे पास 10 लिफाफे और 11 चिट्ठियाँ हैं। और तुझे हरेक चिट्ठी एक लिफाफे में रखनी है। तू इन चिट्ठियों को लिफाफे में कैसे रखेगा?

क्या बोली, समझ में नहीं आया!

तू इधर ध्यान देगा तभी न समझ में आएगा!

ठीक है! ठीक है! मैं हरेक लिफाफे में 10 चिट्ठियाँ रखूँगा। और बची हुई 1 चिट्ठी मैं 10 में से किसी भी एक लिफाफे में रख दूँगा।

एकदम सही। यानी तू यकीन से कह सकता है कि कम से कम एक लिफाफे में दो चिट्ठियाँ होंगी।

हाँ, पर ये तो कॉमन सेंस की बात है पगली!

हो सकती है। लेकिन ये गणित का एक जरूरी सिद्धान्त भी है।

चिट्ठियों और लिफाफों से गणित का क्या लेना-देना?

यह पिजनहोल सिद्धान्त है। इसके मुताबिक यदि आपको n चीज़ों को m कंटेनर में रखना हो और $n > m$ हो, तो कम से कम एक कंटेनर में 1 से ज्यादा चीज़ें होंगी।

इस सब में
पिजन कहाँ से
आ गया?

मशहूर गणितज्ञ दिरिक्लेट (Dirichlet) ने इस सिद्धान्त के बारे में पहले
फ्रेंच और जर्मन में लिखा। उन्होंने जर्मन में शूबफाह (Schubfach) और
फ्रेंच में टीओवा (tiroir) शब्द का इस्तेमाल किया। अँग्रेजी में इसका
मतलब 'झाअर' होता है। बाद में झाअर शब्द को बदलकर पिजनहोल कर
दिया गया। यह शब्द चिट्ठियों को रखने की छोटी जगह के लिए
इस्तेमाल किया जाता है।

हम्म!
फिर भी ये
गणित कैसे हुआ?

शायद इसलिए क्योंकि इसका
उपयोग करके गणित के कई
सवालों को हल किया जा सकता है।

सच में?
वो कैसे?

यदि तुझे 13 लोगों के एक समूह
में सभी का जन्मदिन पता करना हो
तो क्या तू यह कह सकता है कि
उनमें से कम से कम दो...

...लोगों का
जन्मदिन एक ही
महीने में होगा।

यह तूने कैसे पता
किया? मैंने तो तुझे
उनके जन्मदिन के बारे
में कुछ बताया ही नहीं।

देख, साल में 12 महीने होते हैं।
यदि उनमें से 12 लोगों के जन्मदिन
अलग-अलग महीनों में हों तो भी
13वें व्यक्ति का जन्मदिन भी इनमें से
किसी एक महीने में ही होगा।

तो 13 लोग, 12 महीने...

वैसे ही जैसे कि
12 लिफाफे, 13 चिट्ठियाँ!
इसके बारे में और बता।



ओके। मान ले एक छोटी-सी पार्टी में कुछ लोग शामिल हुए हैं। और हर व्यक्ति कम से कम एक व्यक्ति को जानता है। तो मैं यकीनन यह कह सकती हूँ कि कम से कम दो लोग ऐसे हैं जो पार्टी में समान संख्या में लोगों को जानते हैं। पर याद रखना कि यदि मैं किसी को जानती हूँ तो वो व्यक्ति भी मुझे जानता है।

पार्टी में कितने लोग हैं? ये जानना ज़रूरी नहीं है?

ओके। मान लेते हैं कि पार्टी में 10 लोग हैं। ये नामुमकिन है कि पार्टी में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो किसी को नहीं जानता हो।

यानी कि कोई भी एक व्यक्ति अधिकतम 9 लोगों को जान सकता है। उम्मीद है कि तू खुद को इसमें शामिल नहीं कर रही है।

शायद नहीं।

बिल्कुल ठीक।

अजीब है, मैं दूसरो को जान सकता हूँ पर खुद को नहीं!

सही कह रहा है। अधिकतम संख्या 9 ही है। तो यदि कोई व्यक्ति पार्टी में शामिल 9 लोगों को जानता तो वह सभी को जानता है।

तो हमारे पास 1 से लेकर 9 तक की 9 संख्याएँ हैं। और पार्टी में 10 लोग हैं।

अब ज्ञात लोगों की संख्या को लिफाफे और पार्टी में शामिल लोगों की संख्या को चिट्ठियाँ मान ले।

यानी कि 9 लिफाफे और 10 लोग। तो जैसे 1 लिफाफे में दो चिट्ठियाँ होंगी, वैसे ही कम से कम दो लोग ऐसे होंगे जो समान संख्या में लोगों को जानते होंगे। मैं समझ तो गया हूँ, पर मैं यकीन से नहीं कह पा रहा हूँ।

ओके। एक और मज़ेदार सवाल लेते हैं। 1 से 20 के तक की संख्या में से कोई भी 11 संख्याएँ चुन ले। और मैं यह गारंटी दे सकती हूँ कि इन 11 संख्याओं में से एक संख्या बाकी की 10 संख्याओं में से एक को विभाजित करेगी।

मान लो मैं एक चिट्ठी हूँ।

यदि मैं 3 लोगों को जानती हूँ तो मेरे लिफाफे का नाम 3 होगा।



कम में कम

23

जनवरी 2025



मैं *चकमक* में पोलर बीयर और बारह सींगों वाले हिरण को देखना चाहती हूँ। क्योंकि मैंने उनके बारे में कभी नहीं पढ़ा तथा उन्हें कभी *चकमक* में नहीं देखा है। और अपने जीवन में भी नहीं देखा है।

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026. मध्य प्रदेश

मुझे *चकमक* पत्रिका बहुत पसन्द है। पर मैं चाहती हूँ कि इसमें एक पन्ना विज्ञान का भी रहे जिससे हमारी जानकारी बढ़े। इस पन्ने में कुछ आसान प्रयोगों की जानकारी दी जाए जो हम घर पर भी कर सकें। हमारे सौरमण्डल व उपग्रहों की कुछ दिलचस्प जानकारियाँ भी रहें जिन्हें पढ़ने में बहुत मज़ा आए। अन्तरिक्ष के बारे में और दिलचस्प चीज़ें बताई जाएँ जो हम बच्चों ने कभी ना पढ़ी हों, और जिनके बारे में सोचा तक ना हो।

मुझे तो गुदगुदाने वाली, हास्य रचनाएँ पढ़नी हैं।
जीवन में हर जगह प्रेशर है। मनोरंजन से भरी
रचनाओं से मन हलका हो जाता है।

जब हम अपने स्कूल की दीवार पत्रिका बनाते हैं तो उसमें सम्पादकीय ज़रूर देते हैं। *चकमक* में सम्पादकीय सिर्फ विशेषांक में ही होती है। बाकी अंकों में नहीं। हमें लगता है कि *चकमक* के हर अंक में सम्पादकीय होनी चाहिए।

अवनि धीमान, पाँचवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

मुझे *चकमक* में क्यों-क्यों वाले सवाल बहुत अच्छे लगते हैं। मैं उनके उत्तर लिखकर भी भेजती हूँ। मैं इस क्यों-क्यों वाले कॉलम में थोड़ा-सा बदलाव चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि हम बच्चों को भी प्रश्न पूछने का अवसर मिले। और आप हमारे प्रश्नों में से कुछ अच्छे प्रश्न छाँटकर एक अंक में प्रकाशित करें और हमें उनके जवाब लिखने का मौका दें। आपको जो उत्तर अच्छे लगें उन्हें अगले अंक में छाप दें। इस तरह से हमें भी प्रश्न पूछने का मौका मिलेगा।

शिक्षा लोवंशी, छठवीं, चकमक क्लब, मेंदुआ, रायसेन, मध्य प्रदेश

सलोनी रावत, दसवीं, जी.आई.सी. कालेश्वर, घीड़ी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

मुझे राजनीति के बारे में पढ़ना पसन्द है। भारत की राजनीति के खास हिस्से पढ़ना चाहती हूँ। हमें भी तो पता चले कि भारत किस दिशा में जा रहा है।

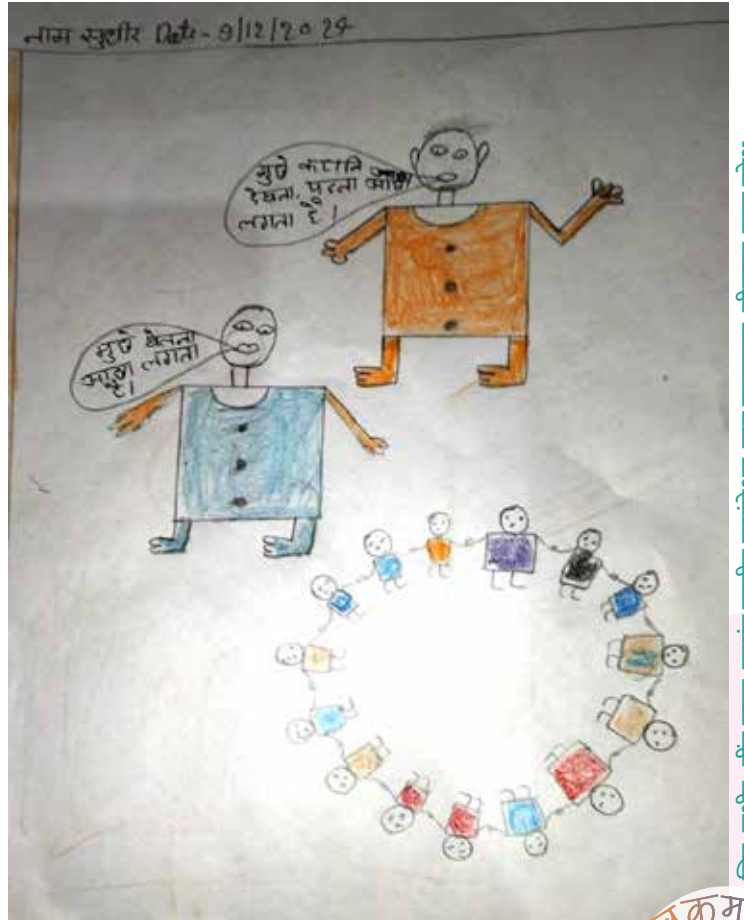
मैं *चकमक* में चुटकुले देखना चाहती हूँ। क्योंकि मुझे चुटकुले अच्छे लगते हैं। *चकमक* में चुटकुले बहुत कम आते हैं।

अनुका एक्का, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला परसा, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

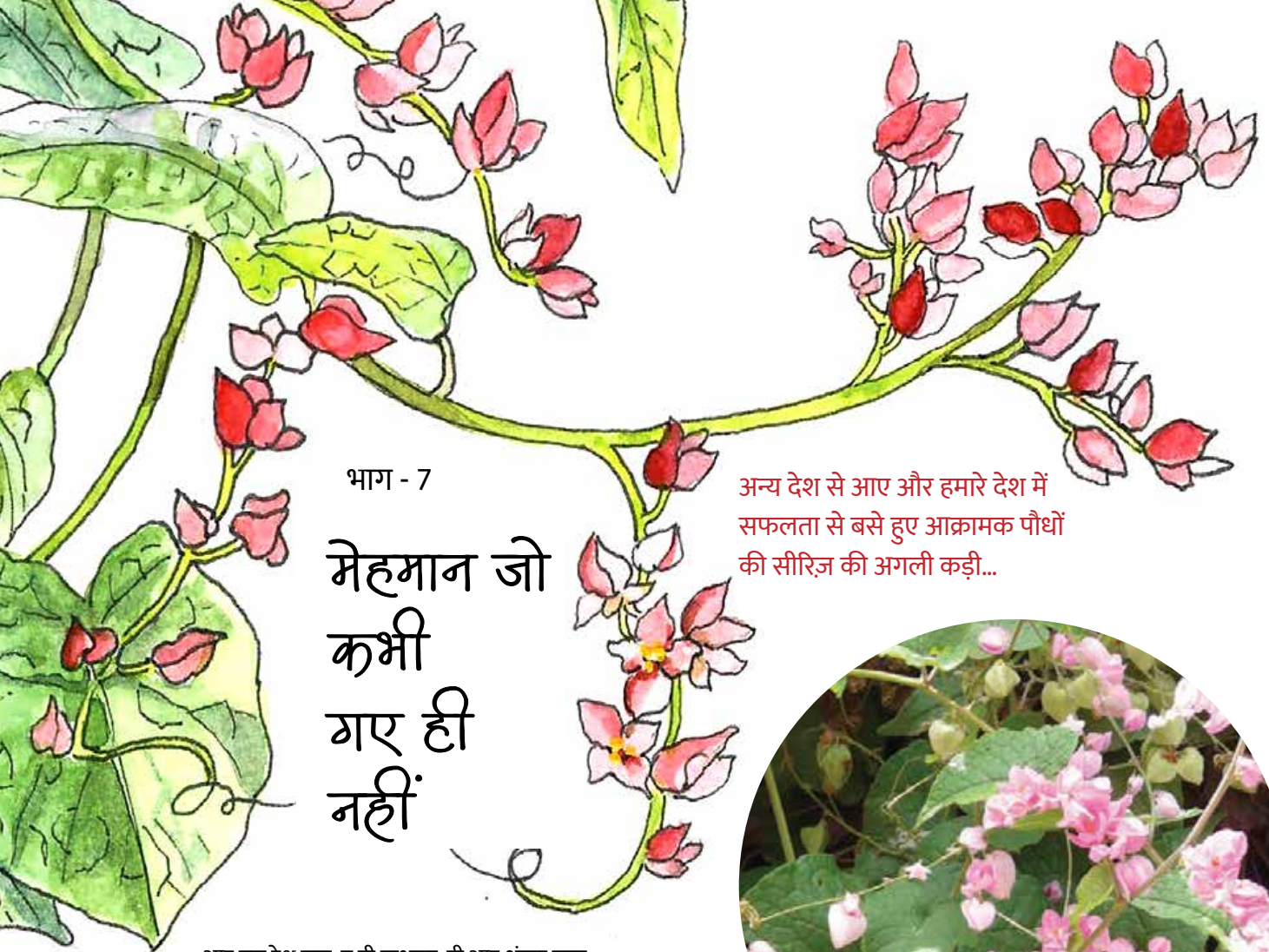
इस बार की *चकमक* पत्रिका का कवर का रंग मुझे अच्छा नहीं लगा। बहुत ही नीरस-सा लग रहा था। थोड़ा डार्क होता तो ज़्यादा अच्छा लगता।

मृगांक चमोली, सावतीं, केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी, उत्तराखण्ड

मैं *चकमक* में आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट की जानकारी पढ़ना चाहता हूँ। पहले तुम भी बनाओं में यह आता था। अब नहीं आता है। मुझे नई चीज़ बनाना अच्छा लगता है।



चित्र: सुधीर, नींव समूह, स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन, ग्राम मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश



भाग - 7

मेहमान जो
कभी
गए ही
नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में
सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों
की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिता जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर



जंगली पालक (कोरल वाइन)

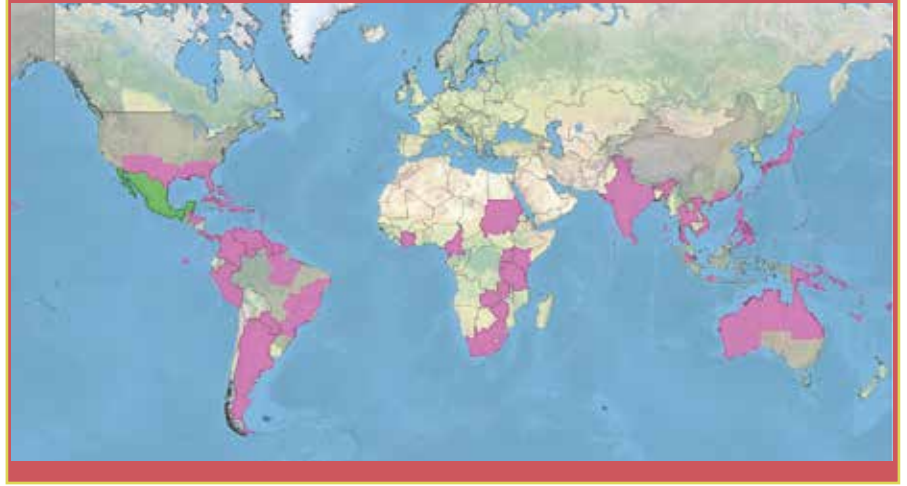
वैज्ञानिक नाम: *एंटीगोनन लैटोपस*
(*Antigonon leptopus*)

मूल: मध्य अमेरिका

कैसे पहुँचा: भारत व अन्य
उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों में इसे सजावटी
पौधे के तौर पर लाया गया।

जंगली पालक तेज़ी-से बढ़नेवाली एक बेल है। ये तन्तुओं (tendrils) के सहारे ऊपर चढ़ती है। इसके पत्ते 1 से 5 सेंटीमीटर लम्बे और दिल के आकार के होते हैं। इसके छोटे फूल गुच्छों में खिलते हैं और ऐसे लटकते हैं जैसे कोई झरना गिरता है। फूलों के चमकीले गुलाबी-सफेद से लेकर गुलाबी रंग के बाह्यदल (saple) इन्हें शानदार बनाते हैं। इसके खुशबूदार फूल विविध परागणकर्ताओं को आकर्षित करते हैं जैसे कि तितलियाँ, मधुमक्खियाँ और पतंगे। जंगली पालक के बीज पानी, पक्षियों और स्तनधारी जानवरों से फैलते हैं। बीज के अलावा ये कन्दों और तने के टुकड़ों से भी उग सकता है।

ये पौधा विभिन्न किस्म के वातावरण में पनप जाता है, जैसे नदी के किनारे और पानी के अन्य स्रोतों के पास, जंगलों के हाशिए पर, पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित क्षेत्रों में, मैंग्रोव में और तटीय रेत के टीलों पर। नमी वाले क्षेत्रों में ये सदाबहार रहता है। लेकिन सूखे वातावरण में ये मौसम के साथ खतम हो जाता है और अनुकूल परिस्थितियों में फिर से उग जाता है।



प्रवेश



स्वाभाविक



मूल जानकारी नहीं दर्ज

असर

जंगली पालक की बेल अन्य पौधों के ऊपर उग जाती है व स्थानीय पौधों को दबा देती है। इस तरह यह उन्हें बढ़ने नहीं देती। सूखे पर्यावरण में इसके गिरे हुए पत्ते ईंधन का काम करते हैं और आग लगने की सम्भावना को बढ़ाते हैं।

बन्दोबस्त

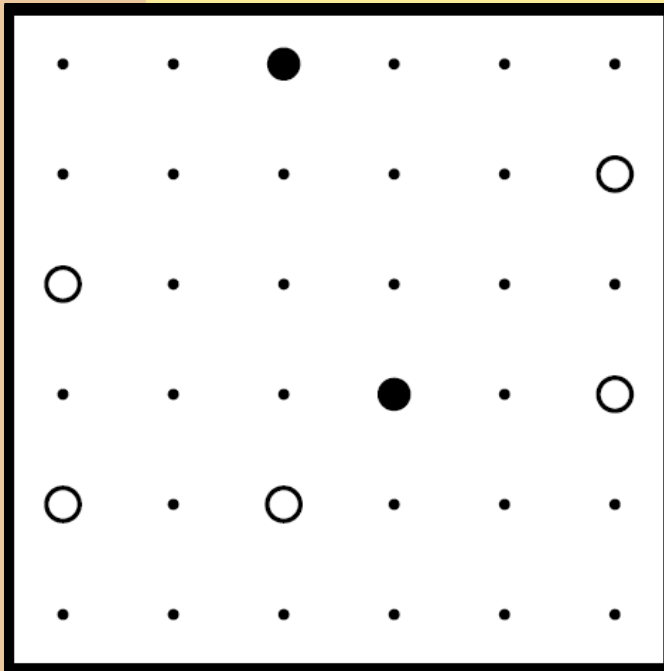
औज़ारों का सावधानी से इस्तेमाल करते हुए पूरे पौधे को जड़ों-कन्दों समेत उखाड़ना होता है। ऐसा कई सालों तक बार-बार करना होता है क्योंकि जंगली पालक बचे हुए छोटे टुकड़ों से आसानी से उग सकता है। उखाड़े हुए पौधों और उनके हिस्सों को सावधानी से नष्ट करना होता है। नियंत्रण के कोई असरदार जैविक या रासायनिक तरीके नहीं हैं।



रुकमक

27

जनवरी 2025



4. क्या तुम बता सकते हो कि इनमें से कौन-सी संख्याएँ सामान्य तरह से लिखी हैं और कौन-सी उल्टी? पर हाँ, चकमक को या अपने सिर को घुमाकर देखने की कोशिश मत करना।



5. दी गई ग्रिड में कई सारे देशों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

इ	मा	ला	पे	कं	ज	पा	भ	बां
ज़	ट	चि	रू	स	ने	र्म	फ	ग्ला
रा	कीं	ली	क्यू	र्बि	पा	स	नी	दे
इ	रा	क	बा	या	ल	गु	द	श
ल	घा	ना	इ	ज़ी	रि	या	र	जा
का	भू	डा	भ	जै	टी	ना	लैं	पा
ची	टा	ज	ला	पा	क	स्वी	ड	न
स्पे	न	र्म	भा	र	त	य	म	न
डा	ली	सिं	गा	पु	र	के	पा	ला

1. दी गई ग्रिड में केवल आड़ी व खड़ी लाइनों की मदद से एक ऐसा लूप बनाओ जो सभी काले और सफेद गोलों से होकर गुजरता हो। इसे पेंसिल को उठाए बिना बनाना है और ऐसा करते हुए इन बातों का ध्यान रखना:
 - हर काले गोले पर लाइन को मोड़ना ही है और काले गोले के बाद कम से कम दो खानों तक लाइन सीधी रहेगी।
 - हर सफेद गोले से लाइन को सीधे ही जाना है। पर सफेद गोले के अगल-बगल के किसी एक खाने से लाइन को मोड़ना है।
2. 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 को + व × के चिह्न के साथ इस्तेमाल करके 100 उत्तर लाना है। ध्यान रखना कि तुम संख्याओं का क्रम बदल नहीं सकते।
3. एक ही अंक को 3 बार उपयोग करके उत्तर में 24 कैसे ला सकते हैं? इसके कई जवाब हो सकते हैं।

माथा पच्ची

फटाफट बताओ

में एक संख्या हूँ। यदि मुझमें एक अक्षर जोड़ दो तो मैं खाने की चीज़ बन जाता हूँ। बताओ मैं कौन-सी संख्या हूँ?

(प्राज्ञः - प्राज्ञः)

ऐसा क्या है जिसे जितना तेज़ फाड़ो, उतनी तेज़ आवाज़ आती है?

(आलसः)

परिवार हरा, हम भी हरे एक थैली में तीन-चार भरे

(पुष्पः)

रंग-बिरंगी देह हमारी भरे पेट में फाहा जाड़े की कठिन रातों में सब ने मुझको चाहा

(पुष्पः)

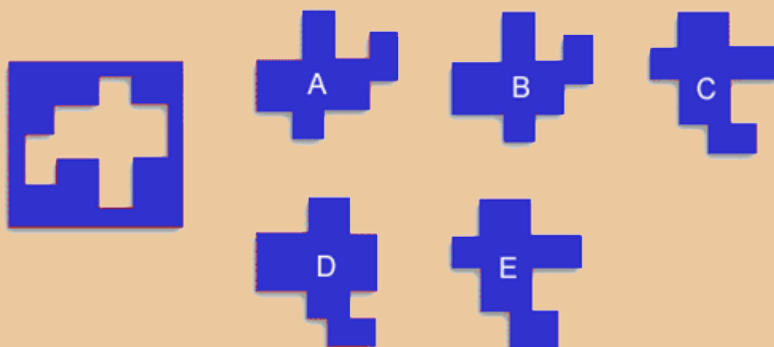
बारह घोड़े तीस घाड़ी तीन सौ पैंसठ करे सवारी

(आलसः)

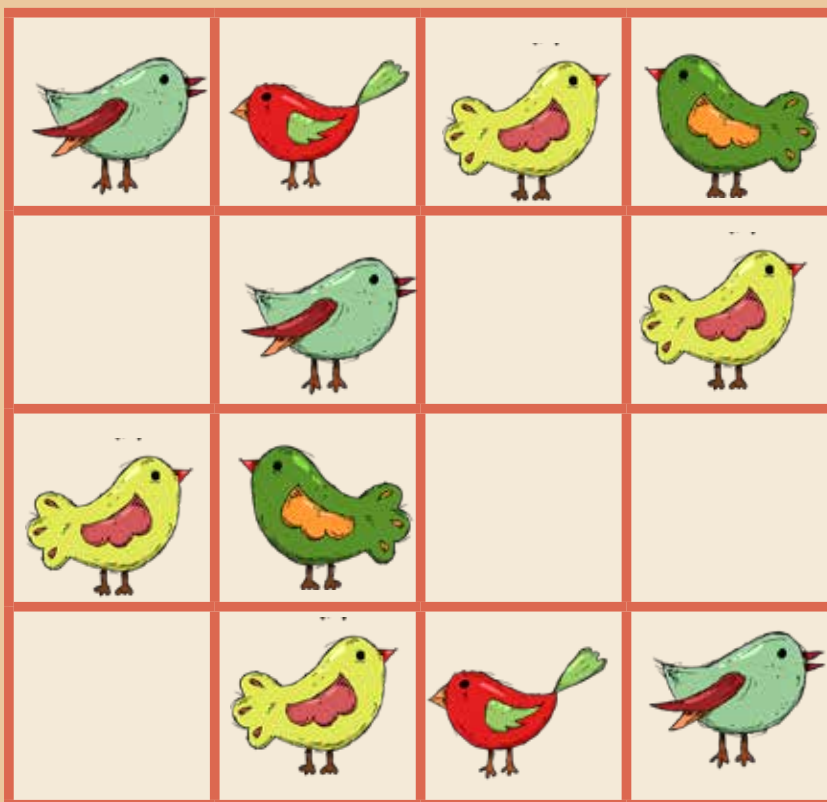
6. दिए गए त्रिभुज के साथ एक त्रिभुज ऐसे बनाएँ कि 5 छोटे त्रिभुज बन जाएँ।



7. दिए गए टुकड़ों में से कौन-सा टुकड़ा इस चित्र में एकदम फिट बैठेगा?



8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग रंग की चिड़िया आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी चिड़िया आएगी?



नए पत्ते

अक्सर कहा जाता है कि बाल-साहित्य वयस्क ही लिखते हैं या लिख सकते हैं। लेकिन प्रकाशन की दुनिया में हम आजकल नई ऊर्जा और नई हलचल देख सकते हैं। इसकी कुछ झलकियाँ तुम्हें 'नए पत्ते' नाम के इस नए कॉलम में देखने को मिलेंगी। इस कॉलम में अंकुर संस्था से जुड़े स्कूली बच्चे-बच्चियाँ ही लिखा करेंगे। कह सकते हैं कि यह लिखावट एक अनगढ़ प्रयास है। लेकिन इसकी शैली, विषयवस्तु और नज़रिए में तुम्हें शायद एक ताज़गी मिलेगी। उम्मीद है कि यह कॉलम तुम्हें चकित करेगा और कभी-कभार विचलित भी।

न खेलने की परेशानी

राधिका

अब तो प्रदूषण का हाल यह है कि हर साल बीस दिनों की छुट्टी हो जाती है। इसे हम प्रदूषण की छुट्टी भी कह सकते हैं। प्रदूषण की इन्हीं छुट्टियों के बाद आज अंजली स्कूल जाने के लिए पहले की तरह ही सात बजकर दस मिनट पर घर से निकली। चारों तरफ धुआँ था। आँखें मलने के बावजूद भी सब कुछ धुँधला ही दिख रहा था। लग रहा था ठण्ड का घना कोहरा छाया हुआ है। लेकिन यह नुकसानदायक धुआँ था।

अंजली की आँखों में चिरमिराहट मच रही थी। इससे वह बेचैन होकर अपनी आँखों को मले जा रही थी। यह धुआँ सिर्फ आँखों को ही कष्ट नहीं दे रहा था, बल्कि साँसों और गले के सुर-ताल में भी हड़कम्प मचा रहा था। इसीलिए अंजली को उसकी मम्मी ने स्कूल जाने से मना किया था। पर अंजली यह सोचकर स्कूल के लिए निकल गई कि इतने दिनों की छुट्टियों के बाद वह अपने स्कूल में दोस्तों से मिलेगी और खूब मस्ती करेगी।

स्कूल पहुँची तो देखा कि पढ़ाई शुरू हो चुकी थी। एक पल के लिए तो उसे लगा कि वह लेट हो चुकी है। अंजली तेज़ कदमों से बढ़ते हुए क्लास में पहुँची। वहाँ केवल दस-पन्द्रह लड़कियाँ

ही दिखाई दे रही थीं। इतनी कम लड़कियों को देखकर वह गहरी साँस लेती हुई आगे बढ़ी। फिर दूसरी लाइन की तीसरी बेंच पर अकेले बैठी अपनी दोस्त गुनगुन से बोली, “आज तो स्कूल बहुत जल्दी लग गया। प्रार्थना इतनी जल्दी समाप्त क्यों हो गई, और लड़कियाँ भी इतनी कम आई हैं।”

गुनगुन अंजली को अपने साथ बैठने का इशारा कर बोली, “आज प्रार्थना हुई ही कहाँ है और अभी थोड़ा टाइम बचा हुआ है। बाकी लड़कियाँ भी आती ही होंगी।”

मैम के आने का समय भी हो गया था। आते ही मैम ने सभी को जल्दी से बैठने का इशारा किया और अटेंडेंस लेने लगीं। उसके बाद वे क्लास में नज़रें दौड़ाती हुई बोलीं, “बीस दिन की छुट्टियाँ कम पड़ गई थीं क्या? ज़्यादा बच्चे आज भी नहीं आए?” सब लड़कियाँ एक-दूसरे को देखने लगीं। मैम फिर किताब निकलवाकर कहानी पढ़ाने लगीं। कहानी खतम होते ही मैम ने सभी लड़कियों की तरफ देखते हुए कहा, “इस चैप्टर के प्रश्न-उत्तर खुद कर लेना। मैं प्रश्न फोन पर भेज दूँगी।”

पता ही नहीं चला कि पहला पीरियड कब खतम हो गया। आज पाँचवां पीरियड गेम्स का था। लड़कियाँ अभी से ही अपनी टीम बनाने लगीं और प्लानिंग करने लगीं कि कौन-सा खेल खेलेंगी। सारी लड़कियाँ गेम्स के पीरियड का इन्तज़ार कर रही थीं। धुएँ के कारण कोई भी लड़की शायद न घर पर और न बाहर ही खेल पाई थी।

लंच की घण्टी बजते ही सबको लगा कि अब तो मैदान में जाने को मिलेगा। पर पता चला कि आज लंच क्लास में ही होगा। पाँचवें पीरियड की घण्टी बजते ही सब लड़कियाँ दरवाज़े के सामने लाइन लगाकर खड़ी हो गईं। लाइन पूरी बनने ही वाली थी कि मॉनिटर अपनी आँखों पर चढ़े चश्मे को ठीक करती हुई बोली, “मुझे टीचर से पूछकर तो आने दो, पहले ही लाइन बनाकर खड़ी हो गईं।”

सब आपस में बातें करने लगीं कि नीचे जाकर क्या-क्या खेलेंगे। सना अपनी पक्की दोस्त से बोली, “हम चार लोगों का ग्रुप बना लेते हैं। हम सब चिड़ी-बल्ले खेलेंगे और किसी और को खेलने ही नहीं देंगे।” हामी भरते हुए चारों बड़ी ही खुश लग रही थीं। तभी नेहा अपनी मण्डली से बोली, “हम सब सबसे पहले वॉलीबॉल लेंगे।”

कोई बोला, “फुटबॉल खेलेंगे।”

कोई बोला, “हम पकड़म-पकड़ाई खेलेंगे।”

खुश होकर गई मॉनिटर जब लौटी तो उसका मुँह लटका हुआ था। उसके हाथों में चार लूडो और चार चेसबोर्ड थे। क्लास में आते ही सभी लड़कियाँ उससे पूछने लगीं, “क्या हुआ? यह लूडो और चेसबोर्ड क्यों लाई हो?”

मॉनिटर मुँह लटकाते हुए बोली, “धुएँ के कारण मैम ने मैदान में खेलने के लिए मना कर दिया है। बोला है कि लूडो और चेसबोर्ड से ही काम चलाओ।” सब उसको देखकर हैरान थीं। पीछे से एक लड़की की आवाज़ आई, “ये क्या बात हुई?”

मॉनिटर बोली, “मैम ने कहा है कि बाहर बहुत प्रदूषण है। सभी बच्चों को क्लास में ही रहना होगा। अभी कुछ दिनों तक न तो प्रार्थना होगी और न ही खेल का पीरियड होगा।”

फिर वही लड़की बोली, “तो स्कूल ही क्यों बुलवा रहे हैं? हम ऑनलाइन ही पढ़ लेते। घर से स्कूल आते हुए भी तो प्रदूषण का खतरा होता है ना!”

सभी लड़कियाँ एक साथ बोलीं, “हाँ! ये तो सही बात है।”

मॉनिटर बोली, “अब मैं कुछ नहीं कर सकती।”

सब की बातें शोर पैदा कर रही थीं। तभी लम्बी हाइट वाली, आँखों पर चश्मा लगाए, सूट पहने मैम क्लास में आई और तेज़ आवाज़ में बोलीं, “क्लास से बाहर मत निकलना। क्लास में ही खेलना और शोर मत करना।”

मैम सबको चुप कराते हुए वहाँ से लौट गई और लड़कियाँ खेलने में लग गईं। अंजली को तो अब सोने का मन कर रहा था। खिसियाकर अंजली बोली, “इससे तो अच्छा होता कि मैं घर पर ही रह जाती। स्कूल आने का कोई फायदा ही नहीं हुआ। न पढ़ाई हो रही है और न ही बाहर जाने दे रहे हैं। इतना कहकर वह डेस्क पर सिर रखकर बैठ गई।

राधिका को अंकुर क्लब से जुड़े हुए लगभग तीन साल हो गए हैं। अंकुर कलेक्टिव से जुड़ने के बाद इन्होंने कहानियाँ लिखने की शुरुआत की। ये दक्षिणपुरी में रहती हैं। इन्हें आपबीती लिखने में बेहद लुप्त आता है। ये परिवार के बीच बातों-बातों में कहानियाँ खोज निकालती हैं।

मक



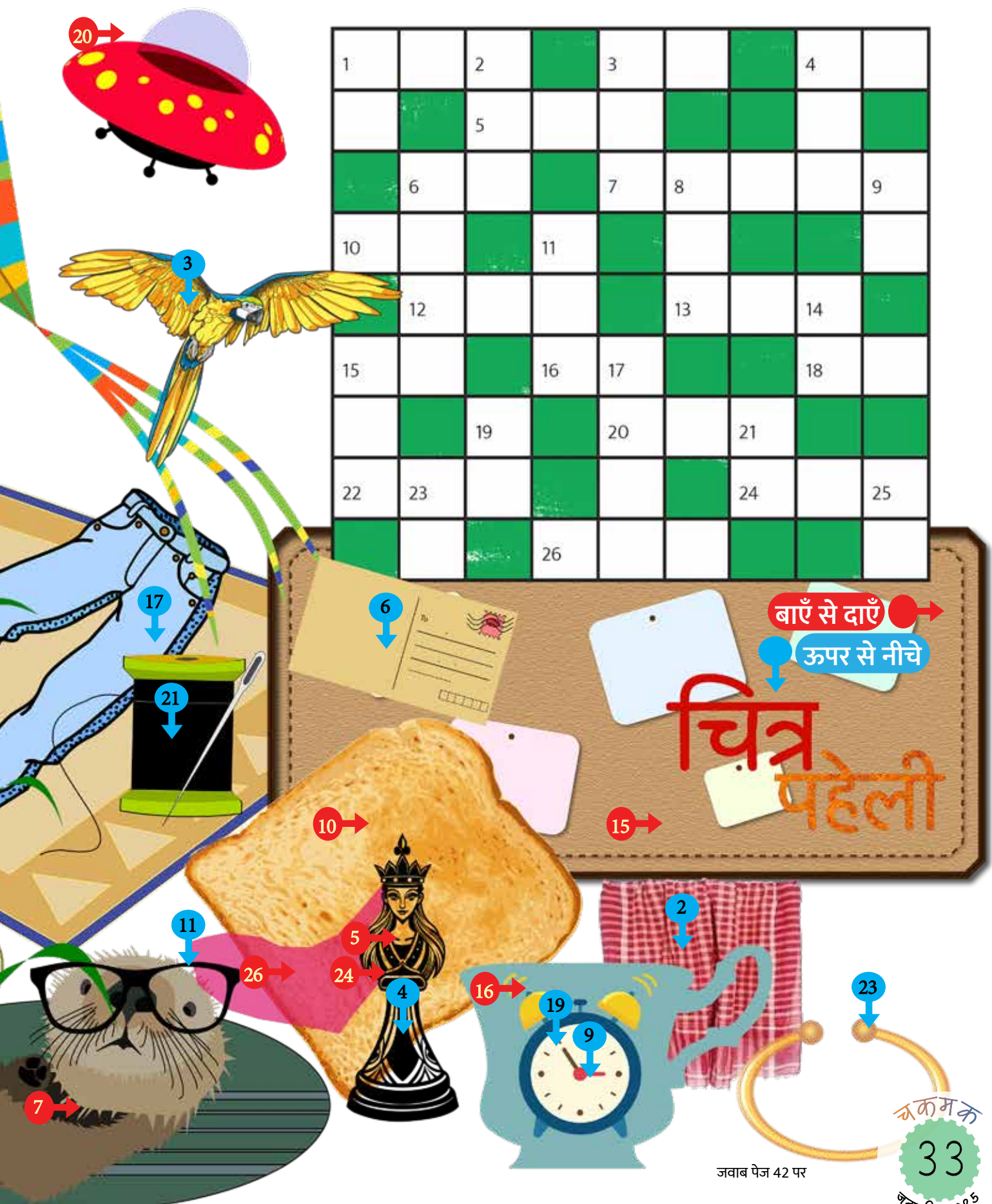
8	7		1	4	9	5		2
9	1	6		2		7		3
	4			7	6	8	1	
4	9	1				3		
		7		1	3			8
6	3	8				4	2	
1	6						3	4
			2		4	1		6
				9	1			

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



सुडोकू 80





1		2		3			4	
		5						
	6			7	8			9
10			11					
	12				13		14	
15			16	17			18	
		19		20		21		
22	23					24		25
			26					



सारी विषम संख्याएँ और उनकी दुगुनी संख्याओं को लेकर देखें? क्या हम इसमें 1 से 20 तक की सारी संख्याओं को कवर कर पाएँगे?

ओके। तो एक समूह हुआ {1, 2, 4, 8, 16}

मैं इन्हें लिख लेता हूँ:

$$\begin{aligned} 1 \times 2 &= 2 \\ 2 \times 2 &= 4 \\ 4 \times 2 &= 8 \\ 8 \times 2 &= 16 \end{aligned}$$

{1, 2, 4, 8, 16},
{3, 6, 12},
{5, 10, 20},
{7, 14},
{9, 18},
{11},
{13},
{15},
{17},
{19}.

ऐसे 10 समूह बने।

{1, 2, 4, 8, 16},
{3, 6, 12},
{5, 10, 20},
{7, 14},
{9, 18},
{11},
{13},
{15},
{17},
{19}.

मैं देख पा रहा हूँ कि यदि इनमें से किसी भी समूह से कोई भी दो संख्याएँ चुनी जाएँ तो उनमें से एक संख्या दूसरी संख्या को पूर्णतः विभाजित करती है।

इस तरह हमें हमारे 10 लिफाफे मिल गए!

और यदि हम इनमें से 11 चिट्ठियों को लें तो कम से कम 2 को एक ही लिफाफे में रखना होगा। एक बार फिर पिज्जनहोल सिद्धान्त!

एक सैंकेंड, रुक। तेरा मतलब है कि यदि हम इन संख्याओं में से 10 ऐसी संख्याएँ चुन लें जिनमें से कोई भी एक संख्या दूसरी को विभाजित न करती हो, तब भी यदि हमें एक संख्या और चुननी हो तो...

जैसे कि 8, 6, 10, 7, 9, 11, 13, 15, 17, 19... में से कोई भी किसी को विभाजित नहीं करता है।

...हमारे पास दो संख्याएँ ऐसी होंगी जिनमें से एक संख्या दूसरी को विभाजित करेगी।

तो अब बता यह गणित है या नहीं?

वाह! कितना मजेदार गणित है ये तो।

हम जब मूँज चीरने गए

सालिया बानो

सीख समूह, स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन
ग्राम मलसराय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मैं और मेरी
अप्पी और गाँव की तीन-
चार औरतें मिलकर खेत
की ओर मूँज चीरने
जा रहे थे। उस दिन
बहुत तेज़ धूप थी और
मौसम भी साफ था। तभी
अचानक मैंने देखा तो
रास्ते पर साँप पड़ा था।
तभी मेरी अप्पी चिल्लाई,
“देखो-देखो कितना बड़ा
साँप है।” हम सब डर
गए। तब तक वह साँप
अपने बिल में चला गया।
और हम सब मूँज चीरने
लगे। अचानक ही बादल
छाए और आँधियाँ चलने
लगीं। फिर बिजली भी
कड़कने लगी और हम
सब भागकर घर आ गए।

एक दिन मैं अपने घर के पास बैठा था। वहीं पर एक
गाय बँधी थी। अचानक कहीं से एक चिड़िया उड़ते-उड़ते
आई और गाय की पूँछ पर बैठ गई। उसके नीचे दाना
गिरा था। चिड़िया दाना खाने लग गई। इतने में गाय ने
चिड़िया के ऊपर गोबर कर दिया। चिड़िया गोबर में दब
गई। वह निकल नहीं पा रही थी। तब मैं जल्दी-से घर
के अन्दर गया और पानी लाकर गोबर पर डाल दिया।
गोबर गीला हो गया और चिड़िया फुर्र-से उड़ गई।

मेरी अपनी कहानी

आरुष

पहली 'बी', यश विद्या मन्दिर
अयोध्या, उत्तर प्रदेश



चित्र: आस्था, ग्यारहवीं, महावीर पब्लिक स्कूल, सुन्दरनगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

चित्र: सन्तोष अहिरवार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश



कक्षा 7वीं

37

जनवरी 2025

सिंगापुर का सफर

समर कुलश्रेष्ठ
छठवीं, पाथवेज स्कूल
नोएडा, उत्तर प्रदेश

चित्र: जैस्मीन, पाँचवीं, दीपालया सीनियर
सैकेंडरी स्कूल, घुसबैठी, नूंह, हरियाणा



मेरा सबसे यादगार दिन तब था जब मैं सिंगापुर गया था। मैं वहाँ पाँच दिन के लिए गया था। मैं वहाँ अपने परिवार के साथ यूनिवर्सल स्टूडियो गया। यूनिवर्सल स्टूडियो एक बहुत अच्छी जगह है क्योंकि वहाँ पर बहुत सारी राइड्स हैं। मैंने वहाँ पर अपने परिवार के साथ बहुत मज़े किए और मुझे अपने परिवार के साथ समय बिताने का भी मौका मिला।

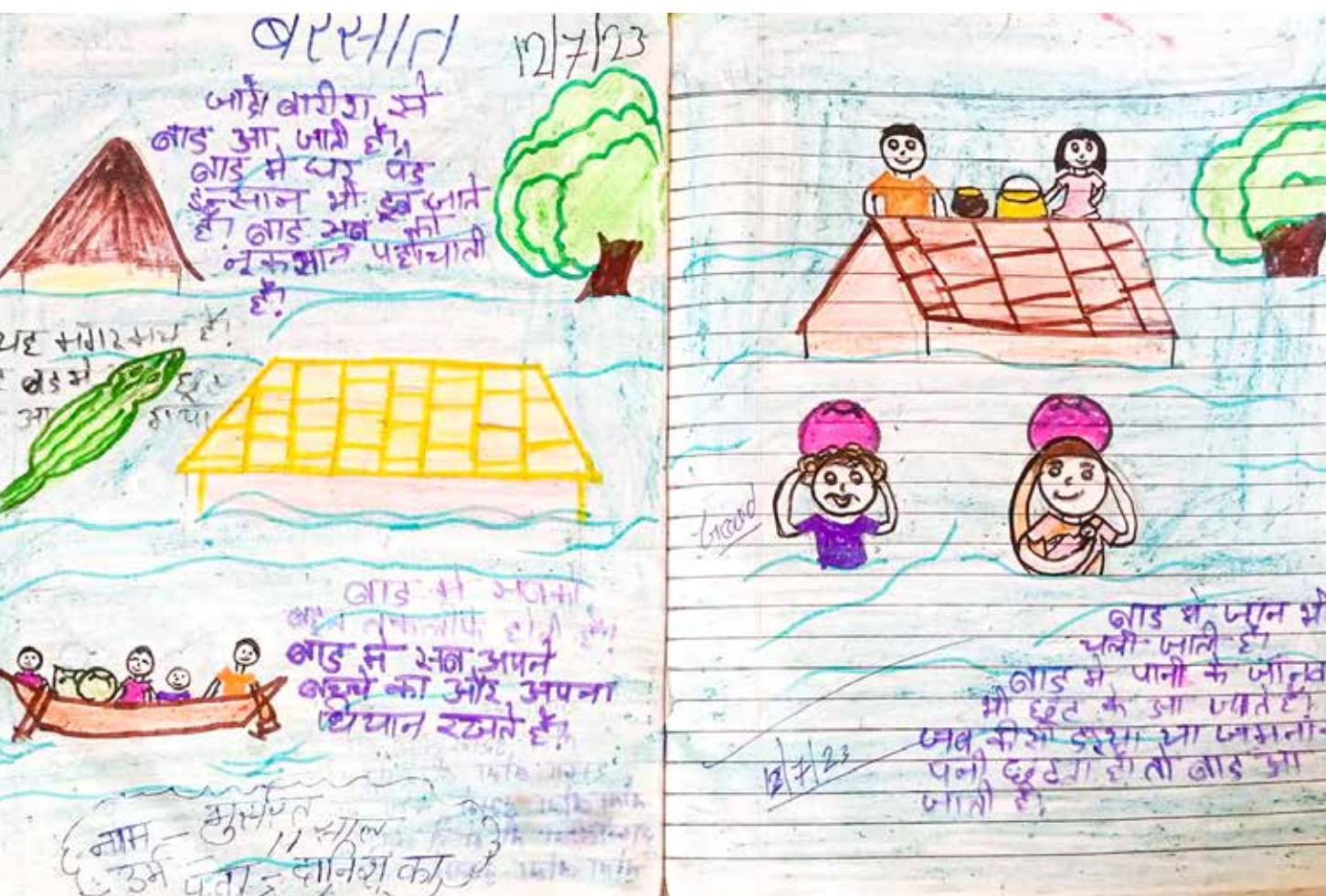
हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हम अपने परिवार के साथ ज़्यादा समय नहीं बिता पाते। क्योंकि जब देखो हम किसी ना किसी काम में फँसे रहते हैं। मैं भी अपने परिवार के साथ

समय नहीं बिता पाता क्योंकि मैं अपने कामों में फँसा रहता हूँ। तो यह मेरे लिए एक बहुत अच्छी छुट्टी थी।

मुझे यह दिन बहुत यादगार लगता है क्योंकि मैंने उस दिन बहुत खुशी मनाई और मुझे अपनी मनपसन्द चीज़ें करने का भी मौका मिला।

मेरी शरारत

सौम्या ददवानी
छठवीं 'ब', नवनिध हासोमल
लखानी स्कूल, सन्त हिरदाराम नगर
भोपाल, मध्य प्रदेश



चित्र: मुसर्त, ग्यारह साल, लोकमित्र शिक्षा केन्द्र, रसूलपुर, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मैं अपने परिवार के साथ मेला घूमने गई थी। वहाँ पर मैंने आइसक्रीम और भेलपुरी खाई थी। वहाँ पर मैंने मम्मी से बड़े झूलों में झूलने की ज़िद की थी। पर मम्मी ने मुझे बड़े झूलों में झूलने से मना कर दिया और कहा, “तुम छोटे झूलों में झूलो। तुम्हें बहुत मज़ा आएगा।”

पर मैं चुपके-से एक बड़ी लड़की के साथ बड़े झूले में बैठ गई। फिर अचानक मम्मी का ध्यान बड़े झूले की ओर गया। मम्मी ने झूले वाले भैया से झूला रुकवाकर मुझे नीचे उतार दिया और बहुत डाँटा भी। फिर मैंने मम्मी से माफ़ी माँगी। और मेला घूमकर हम वापस घर चले गए।

जब भी हमारे स्कूल की छुट्टियाँ होती हैं तो मैं अपनी नानी के घर बिहार जाती हूँ। जब मैं छठवीं कक्षा में थी तब मैं वहाँ गई थी। मेरी दो कज़िन बहनें सुषमा और आभा दी भी मेरे साथ आईं। गाँवों में हम गर्मी के मौसम में अपने घरों की छत पर सोते हैं। मुझे मेरी माँ, नानी और दीदियों के साथ छत पर सोना बहुत पसन्द है।

एक दिन गर्मी बहुत थी। तो सुषमा दीदी ने मुझसे पूछा, “अर्पिता क्यों ना आज छत पर सोया जाए?” उस दिन मेरी माँ एक मौसी के घर गई थीं। मैं छत पर जाने से बहुत घबरा रही थी, तो मैंने मना कर दिया। क्योंकि मुझे मेरे भाइयों-बहनों ने उस बम्बू बागान के बारे में बहुत सारी डरावनी बातें बताई हुई थीं, जो हमारे घर के पीछे था। अगर मैं छत पर जाती तो मैं उस बागान के बम्बूओं को साफ-साफ लहराते देख पाती थी।

लेकिन सुषमा दी ने कहा, “अरे अर्पिता... कुछ भी नहीं होगा। चल ना, चलते हैं।”

तो अन्त में मैं मान गई और हम छत पर सोने के लिए चले गए। हमने देखा कि नानी तो छत पर पहले से ही सो रही थीं। क्योंकि उस दिन मेरी माँ नहीं थी, इसलिए मैं ठीक-से सो नहीं पा रही थी। मेरी नानी और दीदी तो सो चुकी थीं। मेरी आँखें बन्द थीं। लेकिन मैं अभी भी जगी हुई थी।

अचानक से मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे सामने से गुज़रा। मैंने अपनी आँखें खोलीं

और अपने फोन में देखा। रात के लगभग 1 बजे थे।

ऊआं, ऊआं... मुझे एक अजीब-सी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लगा कि कोई लड़की रो रही है। मैं खड़ी हुई और उस बम्बू बागान की ओर देखा। मुझे लगा जैसे वहाँ सफेद कपड़े में कोई लड़की है। लेकिन वह कुछ ही पलों में गायब हो गई। मैं बहुत डर गई थी। मुझे नीचे कमरे में जाने का मन कर रहा था। “नानी... नानीईईई...” मैंने नानी को जगाने की कोशिश की। “मुझे परेशान मत करो। जाओ, सो जाओ।” नानी ने बिना आँखें खोले कहा।

फिर मैंने सुषमा दी को जगाया। “क्या हुआ, अर्पिता?” सुषमा दी ने कहा। “प्लीज़ दीदी नीचे कमरे में चलते हैं ना। मुझे बहुत डर लग रहा है। “मुझे बताओ तो कि क्या हुआ?” उन्होंने पूछा।

मैं आपको कल बताऊँगी। फिर हम नीचे कमरे में चले गए। अगले दिन जब माँ वापस घर आई तो मैंने उन्हें सब बताया। लेकिन उन्होंने कहा, “ऐसा कुछ नहीं होता। तुमने कोई सपना देखा होगा।”

कुछ दिनों बाद जब हम अपने घर अरुणाचल प्रदेश लौट रहे थे तो माँ ने





चित्र: कबीर, सात साल, स्वतंत्र तालीम फाउंडेशन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कहा, “अर्पिता जब मैं तुम्हारी तरह छोटी बच्ची थी तब मैंने भी उस बम्बू बागान में एक लड़की को देखा था।”

“तो आपने ये मुझे पहले क्यों नहीं बताया?”

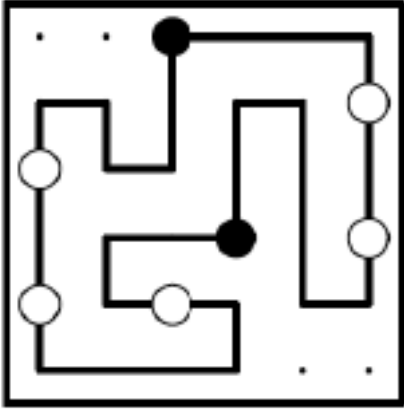
“क्योंकि मैं तुम्हें डराना नहीं चाहती थी। जब मैं बड़ी हुई तो मुझे पता चला कि जब भी चाँदनी रात होती है और चाँद की रोशनी

पेड़ों पर पड़ती है। तो उसकी परछाई ऐसी लगती है जैसे कोई वहाँ खड़ा है।

“ओह! तो आपको मुझे पहले बताना चाहिए था ना,” मैंने कहा।

“हाँ, मेरी ही गलती है। मुझे माफ कर दो।” माँ ने मुस्कराते हुए कहा।

1.



2.

$$1+2+3+4+5+6+7+(8 \times 9)=100$$

3.

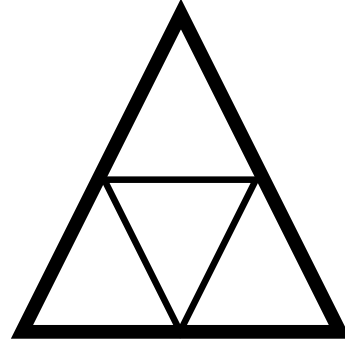
$$8 + 8 + 8 = 24$$

$$22 + 2 = 24$$

4.

पहली पंक्ति: सामान्य, उलटी, उलटी
दूसरी पंक्ति: सामान्य, सामान्य, उलटी
तीसरी पंक्ति: सामान्य, उलटी, उलटी

6.



7.

90 डिग्री से मोड़ने के बाद



5.

इ	मा	ला	पे	कं	ज	पा	अ	बां
ज़	ट	चि	रू	स	ने	र्म	फ	ग्ला
रा	की	ली	क्यू	र्बि	पा	स	नी	दे
इ	रा	क	बा	या	ल	गु	द	श
ल	घा	ना	इ	ज़ी	रि	या	र	जा
का	भू	डा	अ	जै	टी	ना	लैं	पा
ची	टा	ज	ला	पा	क	स्वी	ड	न
स्पे	न	र्म	भा	र	त	य	म	न
डा	ली	सिं	गा	पु	र	के	पा	ला

9.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

1 प	तं	2 ग		3 म	कल		4 पु	अं
ते		5 म	लि	क			त	
	6 पे	छा		7 ऊ	8 द	वि	ला	9 ग
10 टे	स्ट		11 ऐ		ड			क
	12 क	ली	न		13 बा	ल	14 टी	
15 सो	ई		16 क	17 प			18 पी	णा
त		19 घ		20 त	अल	21 शी		
22 ल	23 क	ही		लू		24 ल	ड	25 की
	डा		26 पु	न	री			ल

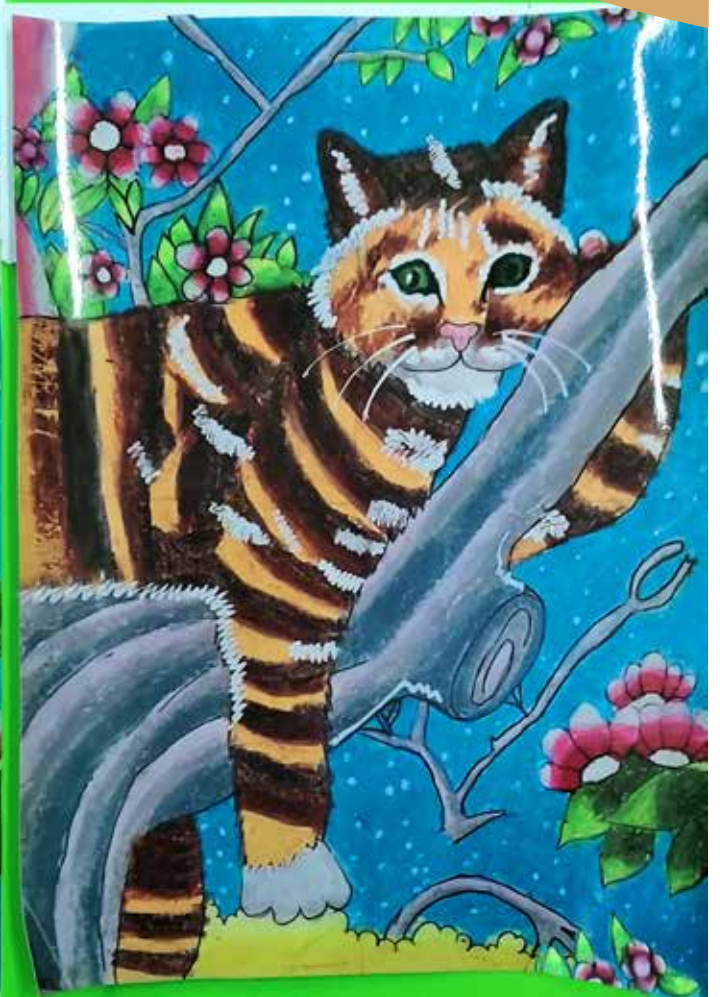
सुडोकू-80 का जवाब

8	7	3	1	4	9	5	6	2
9	1	6	5	2	8	7	4	3
2	4	5	3	7	6	8	1	9
4	9	1	8	6	2	3	7	5
5	2	7	4	1	3	6	9	8
6	3	8	9	5	7	4	2	1
1	6	2	7	8	5	9	3	4
7	8	9	2	3	4	1	5	6
3	5	4	6	9	1	2	8	7

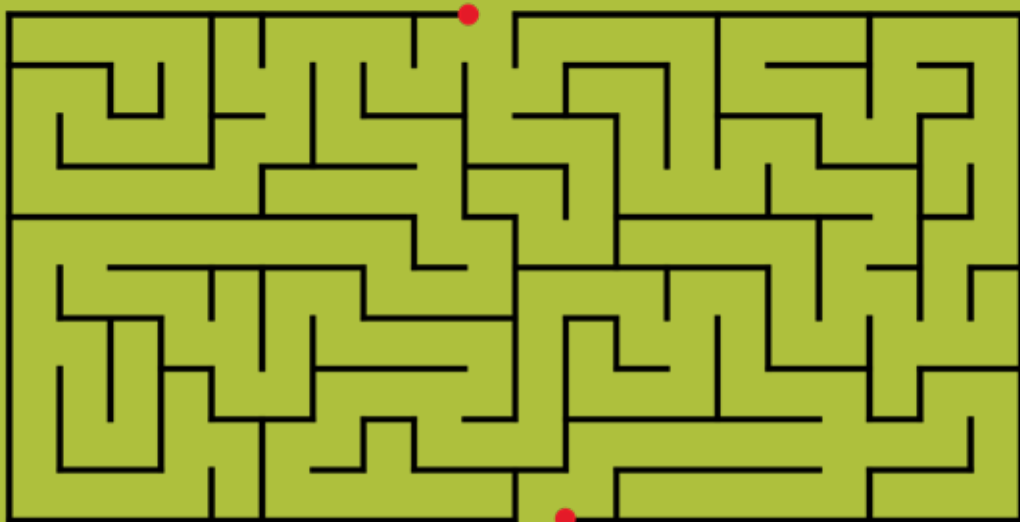
अरायना 3-८ Shiv Nadar School
 मैं चकसक पत्रिका के मैरा पन्ना
 के लिए अपने द्वारा बनाया हुआ एक
 बिल्ली का चित्र दे रही हूँ।

इन दो चित्रों में आठ
 से ज़्यादा अन्तर हैं।
 तुमने कितने ढूँढे?

ढूँढो अन्तर
 3-44



चित्र: अरायना, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



तुम भी जानो

चूहों को गाड़ी चलाने में मज़ा आता है

कैली लैम्बर्ट शायद बोर हुई होगी कि उसने अपने लैब में पल रहे चूहों के साथ कई प्रयोग किए। कुछ साल पहले उसने अपने साथियों के साथ मिलकर प्लास्टिक के एक डिब्बे से एक छोटी-सी कार बनाई। बहुत जल्द ही चूहे सीख गए कि लकड़ी जैसे एक लीवर को दबाने से उनकी गाड़ी चल सकती है। और वे आसानी से स्टीयर करते-करते खाने की किसी पसन्दीदा चीज़ तक पहुँच सकते हैं। कैली को ये भी समझ में आया कि जिन चूहों को वे खिलौनों, पर्याप्त जगह और साथियों के साथ पाल रहे थे, वे ज़्यादा जल्दी गाड़ी सीख रहे थे और कैली को आता देखते ही उछल पड़ते थे। दिलचस्प बात है कि मनुष्यों की तरह ही ये चूहे भी गाड़ी चलाकर खुश हो रहे थे।



दुनिया की सबसे तीखी मिर्ची हर साल बदलती है। 16 जनवरी को यह तय होता है कि मिर्ची की वो कौन-सी किस्म होगी जिसे यह ओहदा दिया जाएगा। हर साल इस दिन अलग-अलग जगहों पर तीखी चीज़ें बनाई जाती हैं और मिर्ची खाने के कॉम्पिटिशन भी होते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय तीखा-मसालेदार दिन



6000 सालों से हम मिर्ची का आनन्द लेते आ रहे हैं। कई लोगों के लिए तो ये खाने का सबसे मजेदार स्वाद है। तो इस साल तुम भी कुछ ऐसे पकवान ज़रूर खाना जिनका तीखापन तुम्हें रुला देता है या फिर बहुत कम पसन्द आता है। हमें लिखना कि तुम्हें किस किस्म की मिर्ची सबसे ज़्यादा अच्छी लगती है और उसे तुम किस रूप में खाना पसन्द करते हो।

